वार्षिकी

2014-2015

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)

अध्यक्ष : प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
उपाध्यक्ष : डॉ. चंद्रशेखर कंबार
सचिव : डॉ. के. श्रीनिवासराव

विषय-क्रम

भूमिका / 5

प्रमुख गतिविधियाँ / 8

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2014 / 9

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2014 / 13

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2014 / 17

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2014 / 21

कार्यक्रम

साहित्योत्सव 2015 / 25

अकादेमी प्रदर्शनी 2014 का उद्घाटन / 25

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2014 अर्पण समारोह / 27

लेखक सम्मिलन / 29

संवत्सर व्याख्यान : आशीष नंदी / 31

खुला मंच / 32

आमने-सामने / 32

युवा साहिती / 34

परिसंवाद : भारतीय की अलिखित भाषाएँ /36

स्थापना दिवस व्याख्यान : एस. एल. भैरप्पा /38

राष्ट्रीय संगोष्ठी : भारतीय कथासाहित्य में क्षेत्र तथा राष्ट्र / 40

आओ कहानी बुनें / 45

पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्वी एवं उत्तर क्षेत्रीय लेखक सम्मिलन / 47

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2013 अर्पण समारोह / 49

बाल साहित्य पुरस्कार 2014 अर्पण समारोह / 54

युवा पुरस्कार 2014 अर्पण समारोह / 58

भाषा सम्मान अर्पण समारोह / 60

अकादेमी महत्तर सदस्यता अर्पण समारोह / 64

संगोष्ठियाँ, परिसंवाद तथा सम्मेलन / 67

हिंदी सप्ताह समारोह / 176

क्षेत्रीय कार्यालयों में हिंदी दिवस समारोह / 178

साहित्यिक कार्यक्रम शृंखला / 180

शासकीय निकायों की बैठकें / 188

सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम / 189

लेखक से भेंट / 190

कथा संधि / 192

कवि संधि / 193

अस्मिता / 195

नारी चेतना / 196

मेरे झरोखे से / 197

व्यक्ति एवं कृति / 198

स्वच्छ भारत दिवस / 199

रंगमंच महोत्सव / 199

वर्णमाला / 200

आविष्कार / 200

साहित्य अकादेमी पुस्तकालय / 201

लेखकों को यात्रा अनुदान / 201

साहित्य मंच, प्रवासी मंच आदि कार्यक्रम / 202

कार्यशालाएँ / 210

पत्रिकाएँ / 210

पुस्तक प्रदर्शनियाँ / 211

परियोजना एवं संदर्भ कार्य / 216

प्रकाशन / 219

वार्षिक लेखा 2014-2015 / i-xxxviii

भूमिका

साहित्य अकादेमी का विधिवत् उद्घाटन भारत सरकार द्वारा 12 मार्च 1954 को किया गया था। भारत सरकार के जिस प्रस्ताव में अकादेमी का यह विधान निरूपित किया गया था, उसमें अकादेमी की यह परिभाषा दी गई है—भारतीय साहित्य के सक्रिय विकास के लिए कार्य करनेवाली एक राष्ट्रीय संस्था, जिसका उद्देश्य उच्च साहित्यिक मानदंड स्थापित करना, भारतीय भाषाओं में साहित्यिक गतिविधियों को समन्वित करना एवं उनका पोषण करना तथा उनके माध्यम से देश की सांस्कृतिक एकता का उन्नयन करना होगा। हालाँकि अकादेमी की स्थापना सरकार द्वारा की गई है, फिर भी यह एक स्वायत्तशासी संस्था के रूप में कार्य करती है। संस्था पंजीकरण अधिनियम 1860 के अंतर्गत इस संस्था का पंजीकरण 7 जनवरी 1956 को किया गया।

भारत का 'राष्ट्रीय साहित्य संस्थान' साहित्य अकादेमी साहित्यिक संवाद, प्रकाशन और उसका देशभर में प्रसार करनेवाली केन्द्रीय संस्था है तथा सिर्फ़ यही ऐसी संस्था है, जो भारत की चौबीस भाषाओं, जिसमें अंग्रेज़ी भी सम्मिलित है, में साहित्यिक क्रिया-कलापों का पोषण करती है। अपने 59 वर्षों में अधिक गतिशील अस्तित्व द्वारा इसने अपने निरंतर प्रयासों से सुरुचिपूर्ण साहित्य तथा पढ़ने की स्वस्थ आदतों को प्रोत्साहित किया है; इसने संगोष्ठियों, व्याख्यानों, परिसंवादों, परिचर्चाओं, वाचन एवं प्रस्तुतियों द्वारा विभिन्न भाषिक और साहित्यिक क्षेत्रों में अंतरंग संवाद को जीवंत बनाए रखा है; कार्यशालाओं तथा वैयक्तिक अनुबंधों द्वारा पारस्परिक अनुवादों की गति को तीव्र किया है; पत्रिकाओं, विनिबंधों, हर विधा के वैयक्तिक सृजनात्मक कार्यों, संग्रहों, विश्वकोशों, ग्रंथ-सूचियों, भारतीय लेखक परिचयकोश और साहित्येतिहास के प्रकाशन द्वारा एक गंभीर साहित्यिक संस्कृति का विकास किया है। अकादेमी ने अब तक चार हज़ार दो सौ से ज़्यादा पुस्तकें प्रकाशित की हैं, अकादेमी हर तीस घंटे में एक पुस्तक का प्रकाशन कर रही है। प्रत्येक वर्ष अकादेमी क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की कम-से-कम तीस संगोष्ठियों का आयोजन करती है। इसके अलावा आयोजित होनेवाली कार्यशालाओं और साहित्यिक सभाओं की संख्या प्रतिवर्ष लगभग दो सौ है। ये कार्यक्रम लेखक से भेंट, संवाद, कविसंधि, कथासंधि, लोक : विविध स्वर, व्यक्ति और कृति, मेरे झरोखे से, मुलाक़ात, अस्मिता, अंतराल, आविष्कार, साहित्य मंच और सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम जैसी शृंखलाओं के अंतर्गत अन्य देशों के लेखकों एवं विद्वानों के साथ आयोजित किए जाते हैं। पिछले वर्ष से महिला लेखकों के लिए नारी चेतना, पूर्वोत्तर लेखकों के लिए पूर्वोत्तरी तथा स्थापना दिवस उत्सवों जैसी नई साहित्यिक कार्यक्रम शृंखलाओं को आरंभ किया गया है।

अकादेमी प्रत्येक वर्ष अपने द्वारा मान्यता प्रदत्त चौबीस भाषाओं में साहित्यिक कृतियों के लिए पुरस्कार प्रदान करती है, साथ ही इन्हीं भाषाओं में परस्पर साहित्यिक अनुवाद के लिए भी पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। ये पुरस्कार साल भर चली संवीक्षा, परिचर्चा और चयन के बाद घोषित किए जाते हैं। अकादेमी उन भाषाओं के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान करने वालों को 'भाषा सम्मान' से विभूषित करती है, जिन्हें औपचारिक रूप से साहित्य अकादेमी की मान्यता प्राप्त नहीं है। यह सम्मान 'कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य' में किए गए योगदान के लिए भी दिया जाता है। अकादेमी प्रतिष्ठित लेखकों को महत्तर सदस्य और मानद महत्तर सदस्य चुनकर सम्मानित करती है। आनंद कुमारस्वामी और प्रेमचंद के नाम से एक 'फ़ेलोशिप' की स्थापना भी की गई है। अकादेमी ने बेंगळूरु, अहमदाबाद, कोलकाता और दिल्ली में अनुवाद-केंद्र तथा दिल्ली में भारतीय साहित्य अभिलेखागार का प्रवर्त्तन किया है। अगरतला में जनजातीय और वाचिक साहित्य परियोजना के प्रवर्त्तन के लिए परियोजना कार्यालय स्थापित किया गया है तथा और भी कई कल्पनाशील परियोजनाएँ बनाई जा रही हैं। साहित्य अकादेमी को सांस्कृतिक और भाषाई विभिन्नताओं का ज्ञान है और वह स्तरों एवं प्रवृत्तियों को ध्वस्त कर कृत्रिम मानकीकरण में विश्वास नहीं करती; साथ ही वह गठन अंतः सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और प्रयोगात्मक सूत्रों के बारे में जागरूक है, जो भारत के साहित्य की विविध अभिव्यक्तियों को एकसूत्रता प्रदान करते हैं। विश्व के विभिन्न देशों के साथ यह एकता अकादेमी की सांस्कृतिक विनिमय के कार्यक्रमों द्वारा एक अंतर्राष्ट्रीय प्रजातिगत आयाम की खोज करती है।

अकादेमी की चरम सत्ता एक निन्यानवे सदस्यीय परिषद् (सामान्य परिषद्) में न्यस्त है, जिसका गठन निम्नांकित ढंग से होता है :

अध्यक्ष, वित्तीय सलाहकार, भारत सरकार द्वारा मनोनीत पाँच सदस्य, भारत सरकार के राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के पैंतीस प्रतिनिधि, साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाओं के चौबीस प्रतिनिधि, भारत के विश्वविद्यालयों के बीस प्रतिनिधि, साहित्य-क्षेत्र में अपने उत्कृष्टता के लिए परिषद् द्वारा निर्वाचित आठ व्यक्ति एवं संगीत नाटक अकादेमी, ललित कला अकादेमी, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, भारतीय प्रकाशक संघ और राजा राममोहन राय लाइब्रेरी फ़ाउंडेशन के एक-एक प्रतिनिधि।

साहित्य अकादेमी की व्यापक नीति और उसके कार्यक्रम के मूलभूत सिद्धांत परिषद् द्वारा निर्धारित किए जाते हैं और उन्हें कार्यकारी मंडल के प्रत्यक्ष निरीक्षण में क्रियान्वित किया जाता है। प्रत्येक भाषा के लिए परामर्श मंडल है, जिसके सदस्य प्रसिद्ध लेखक और विद्वान होते हैं और उन्हीं के परामर्श पर तत्संबंधी भाषा का विशिष्ट कार्यक्रम नियोजित एवं कार्यान्वित होता है।

परिषद् का कार्यकाल पाँच वर्ष होता है। वर्तमान परिषद् अकादेमी की स्थापना के बाद तेरहवीं है और इसकी प्रथम बैठक फ़रवरी 2013 में संपन्न हुई। अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले कार्यकारी मंडल के सदस्यों और वित्त समिति के लिए सामान्य परिषद् के एक प्रतिनिधि का निर्वाचन परिषद् द्वारा किया जाता है। विभिन्न भाषाओं के परामर्श मंडल कार्यकारी मंडल द्वारा नियुक्त किए जाते हैं।

अध्यक्ष

साहित्य अकादेमी के पहले अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरू थे। सन् 1963 में वह पुनः अध्यक्ष निर्वाचित हुए। मई 1964 में उनके निधन के बाद सामान्य परिषद् ने डॉ. एस. राधाकृष्णन् को अपना अध्यक्ष निर्वाचित किया। फ़रवरी 1968 में नवगठित परिषद् ने डॉ. ज़ाकिर हुसैन को साहित्य अकादेमी का अध्यक्ष निर्वाचित किया। मई 1969 में उनके निधन के पश्चात् परिषद् ने डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी को अध्यक्ष चुना। फ़रवरी 1973 में वह परिषद द्वारा पुनः अध्यक्ष चुने गए। मई 1977 में उनकी मृत्यु के पश्चात् उपाध्यक्ष प्रो. के. आर. श्रीनिवास आयंगर साहित्य अकादेमी के कार्यवाहक अध्यक्ष बनाए गए। फ़रवरी 1978 में प्रो. उमाशंकर जोशी अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फ़रवरी 1983 में प्रो. वी.के. गोकाक अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फ़रवरी 1988 में डॉ. बीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 1993 में प्रो. यू.आर. अनंतमूर्ति अध्यक्ष चुने गए। 1998 में श्री रमाकांत रथ अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2003 में प्रो. गोपीचंद नारंग अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2008 में श्री सुनील गंगोपाध्याय अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2013-2017 के लिए पुनर्गठित सामान्य परिषद द्वारा प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को अकादेमी का अध्यक्ष चुना गया।

संविधान

साहित्य अकादेमी की स्थापना भारत सरकार के 15 दिसंबर 1952 के प्रस्ताव के अंतर्गत हुई, जिसमें अकादेमी का संविधान मूलतः अंतर्भुक्त था। अकादेमी एक स्वायत्त संस्था के रूप में कार्य करती है और अपने संविधान में आवश्यक संशोधन करने का अधिकार अकादेमी की सामान्य परिषद् में न्यस्त है। समय-समय पर इस अधिकार का प्रयोग भी किया जाता रहा है।

मान्य भाषाएँ

भारत के संविधान में परिगणित बाईस भाषाओं के अतिरिक्त साहित्य अकादेमी अंग्रेज़ी और राजस्थानी को ऐसी भाषाओं के रूप में मान्यता प्रदान कर चुकी है, जिसमें उसका कार्यक्रम क्रियान्वित किया जा सकता है। इन 24 भारतीय भाषाओं में साहित्यिक कार्यक्रम लागू करने के लिए परामर्श-मंडल गठित किए गए हैं। साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाएँ हैं—असमिया, बाङ्ला, बोडो, डोगरी, अंग्रेज़ी, गुजराती, हिंदी, कन्नड, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयाळम्, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओड़िया, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत, संताली, सिंधी, तमिळ, तेलुगु और उर्दू।

संगठन

प्रधान कार्यालय : साहित्य अकादेमी का प्रधान कार्यालय रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001 में स्थित है। यह भव्य भवन रवींद्रनाथ ठाकुर की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में सन् 1961 में निर्मित हुआ था। इसमें तीनों राष्ट्रीय अकादेमियाँ—संगीत नाटक अकादेमी, ललित कला अकादेमी और साहित्य अकादेमी स्थित हैं।

यह कार्यालय डोगरी, अंग्रेज़ी, हिंदी, कश्मीरी, मैथिली, नेपाली, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत, संताली और उर्दू के प्रकाशनों तथा कार्यक्रमों की देखरेख करता है और इन भाषाओं के संदर्भ में क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में कार्य करता है।

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता : सन् 1956 में स्थापित और अब 4, डी.एल.खान रोड (एस.एस.के.एम. अस्पताल के निकट) कोलकाता-700025 में स्थित यह क्षेत्रीय कार्यालय असमिया, बाङ्ला, बोडो, मणिपुरी और ओड़िया में अकादेमी के प्रकाशन और कार्यक्रमों की देखरेख करता है। इसके अतिरिक्त अंग्रेज़ी और तिब्बती भाषा की कुछ पुस्तकें भी यहाँ प्रकाशित होती हैं। यह अन्य उत्तर-पूर्वी भाषाओं में भी कार्यक्रमों का संयोजन करता है। यहाँ पर एक प्रमुख पुस्तकालय भी है।

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु : सन् 1990 में स्थापित यह क्षेत्रीय कार्यालय अंग्रेज़ी की कुछ पुस्तकों के अतिरिक्त कन्नड, मलयाळम्, तमिळ और तेलुगु में अकादेमी के प्रकाशन और कार्यक्रमों की देखरेख करता है। यह कार्यालय सेंट्रल कॉलेज परिसर, यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी बिल्डिंग, डॉ. बी.आर. आंबेडकर वीथी, बेंगळूरु-560001 में स्थित है। यहाँ पर एक बड़ा पुस्तकालय भी है।

चेन्नई कार्यालय : सन् 2000 में स्थापित यह कार्यालय बेंगळूरु कार्यालय के कुछ कामों की देखरेख करता है और मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443 (304), अन्नासालइ, तेनामपेट, चेन्नई-600018 में स्थित है।

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई : सन् 1972 में स्थापित और 172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई-400014 में स्थित यह कार्यालय हिन्दी और अंग्रेज़ी के कुछ प्रकाशनों सहित गुजराती, कोंकणी, मराठी और सिंधी में अकादेमी के प्रकाशनों और कार्यक्रमों की देखरेख करता है।

प्रकाशनों की बिक्री : साहित्य अकादेमी का बिक्री विभाग 'स्वाति', मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर स्थित है। इसके अतिरिक्त अकादेमी के प्रकाशनों की बिक्री नई दिल्ली स्थित मुख्यालय और मुंबई, कोलकाता, बेंगळूरु और चेन्नई कार्यालयों तथा पुदुचेरी स्थित बिक्री केंद्र से भी की जाती है।

14 फ़रवरी 2007 को साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के रवींद्र भवन परिसर में एक स्थायी किताब-घर का उद्घाटन किया गया।

27 जुलाई 2007 को पुदुचेरी में एक पुस्तक बिक्री काउंटर का उद्घाटन किया गया।

10 अक्तूबर 2007 को रवींद्र सरोवर स्टेडियम, डायमंड हार्बर रोड, कोलकाता में एक स्थायी बिक्री केंद्र का उद्घाटन किया गया।

पुस्तकालय : साहित्य अकादेमी का पुस्तकालय भारत के प्रमुख बहुभाषिक पुस्तकालयों में से एक है, यहाँ अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त चौबीस भाषाओं में विविध साहित्यिक और संबद्ध विषयों की पुस्तकें उपलब्ध हैं। क्षेत्रीय कार्यालयों के पुस्तकालयों को संबंधित क्षेत्रीय भाषाओं के केंद्रों के रूप में स्थापित किया गया है और उन क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण भाषा पुस्तकालयों के लिए यह संपर्क संस्था के रूप में कार्य करता है।

साहित्य अकादेमी वेबसाइट : साहित्य अकादेमी की वेबसाइट http://www.sahitya-akademi.gov.in में इसकी स्थापना, उद्देश्यों, साहित्य अकादेमी की भूमिका एवं उसके इतिहास के विवरण उपलब्ध हैं। इसके अलावा अकादेमी की पुस्तकों की संपूर्ण सूची, जिसमें महत्त्वपूर्ण प्रकाशनों का भाषानुसार विवरण उपलब्ध है, उसकी पत्रिकाओं के बारे में सूचनाएँ, साहित्यिक गतिविधियाँ, विशेष परियोजनाएँ जैसे भारतीय साहित्य अभिलेखागार, अनुवाद—केंद्रों तथा जनजातीय और वाचिक साहित्य परियोजना जैसी विशिष्ट परियोजनाएँ, अकादेमी पुरस्कार तथा महत्तर सदस्यता के विवरण, पुस्तकालय के बारे में सूचना तथा गत वर्षों में संस्था की उपलब्धियों का मूल्यांकन उपलब्ध है।

प्रमुख गतिविधियाँ

- अकादेमी पुरस्कार 2014 घोषित एवं प्रदत्त
- अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2014 घोषित
- अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2013 प्रदत्त
- अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2014 घोषित एवं प्रदत्त
- अकादेमी युवा पुरस्कार 2014 घोषित एवं प्रदत्त
- भाषा सम्मान प्रदत्त
- साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यताएँ प्रदत्त
- 55 संगोष्ठियों, 70 परिसंवादों तथा 1 भाषा सम्मेलन का आयोजन
- 339 नई एवं पुनर्मुद्रित पुस्तकें प्रकाशित
- साहित्य मंच, प्रवासी मंच, राजभाषा मंच सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों तथा पुस्तक विमोचन आदि के 164 कार्यक्रम संपन्न
- 8 कार्यशालाएँ आयोजित
- 'लेखक से भेंट' शृंखला में 20 कार्यक्रमों का आयोजन
- 'व्यक्ति और कृति' के अंतर्गत 13 कार्यक्रम आयोजित
- 'मेरे झरोखे से' शृंखला में 18 कार्यक्रमों का आयोजन
- 'लोक : विविध स्वर' शृंखला के अंतर्गत 5; 'मुलाक़ात' एवं 'युवा साहिती' शृंखला के अंतर्गत 14; 'कथासंधि' शृंखला के अंतर्गत 17, 'कविसंधि' शृंखला के अंतर्गत 16; 'अस्मिता' शृंखला के अंतर्गत 8, 'नारी चेतना' शृंखला के अंतर्गत 12, 'आविष्कार' शृंखला के अंतर्गत 4, 'कवि-अनुवादक' शृंखला के अंतर्गत 6, 'बाल साहिती' के अंतर्गत 1 और 'वर्णमाला' शृंखला के अंतर्गत 2 कार्यक्रमों का आयोजन।
- 32 पुस्तक-प्रदर्शनियों का आयोजन तथा 109 पुस्तक प्रदर्शनियों में सहभागिता।
- 4 बहुभाषी कविता/कहानी पाठ सम्मेलनों का आयोजन
- *इंडियन लिटरेचर* के 6 अंकों, *समकालीन भारतीय साहित्य* के 6 अंकों तथा *संस्कृत प्रतिभा* के 2 अंकों का प्रकाशन

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2014

19 दिसंबर 2014 को नई दिल्ली साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में वर्ष 2014 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार के लिए 24 पुस्तकों का चयन, संबद्ध भाषाओं में त्रिसदस्यीय निर्णायक मंडल की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पूर्व के वर्ष से पहले के तीन वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2010 से 31 दिसंबर 2012 के मध्य) प्रकाशित पुस्तकों पर दिया गया।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार **2014** से सम्मानित लेखक

असमिया	:	अरुपा पतंगीया कलिता, *मरियम आस्टिन अथवा हीरा बरुआ* (कहानी-संग्रह)
बाङ्ला	:	उत्पल कुमार बासु, *पिया मन भावे* (कविता-संग्रह)
बोडो	:	उर्खाव गोरा ब्रह्म, *उदांनिफ्राय गिदिंफिन्नानै* (कविता-संग्रह)
डोगरी	:	शैलेंद्र सिंह, *हाशिए पर* (उपन्यास)
अंग्रेज़ी	:	आदिल जसावाला, *ट्राईंग टू से गुडबाइ* (कविता-संग्रह)
गुजराती	:	(स्व.) अश्विन महेता, *छबि भीतरनी* (निबंध-संग्रह)
हिंदी	:	रमेशचंद्र शाह, *विनायक* (उपन्यास)
कन्नड	:	जी.एच. नायक, *उत्तरार्द्ध* (निबंध-संगह)
कश्मीरी	:	शाद रमज़ान, *कोर काकुद गौम पुशरिथ* (कविता-संग्रह)
कोंकणी	:	(स्व.) माधवी सरदेसाय, *मंथन* (निबंध-संग्रह)
मैथिली	:	आशा मिश्र, *उचाट* (उपन्यास)
मलयाळम्	:	सुभाष चंद्रन, *मनुष्यनु ओरु आमुखम* (उपन्यास)
मणिपुरी	:	नाओरेम विद्यासागर सिंह, *खुङ्गङ् अमसुङ् रिफ़्यूजि* (कविता-संग्रह)
मराठी	:	जयंत विष्णु नारळीकर, *चार नगरांतले माझे विश्व* (आत्मकथा)
नेपाली	:	नंद हाडखिम, *सत्ता ग्रहण* (कहानी-संग्रह)
ओड़िया	:	गोपाल कृष्ण रथ, *बिपुल दिगंत* (कविता-संग्रह)
पंजाबी	:	जसविंदर, *अगरबत्ती* (कविता-संग्रह)
राजस्थानी	:	रामपाल सिंह राजपुरोहित, *सुंदर नैण सुधा* (कहानी-संग्रह)
संस्कृत	:	प्रभुनाथ द्विवेदी, *कनकलोचनः* (कहानी-संग्रह)
संताली	:	जमादार किस्कू, *माला मुदाम* (नाटक)
सिंधी	:	गोप कमल, *सिज अगियां बुकु* (कविता-संग्रह)
तमिऴ	:	पूमणि, *अज़ाडि* (उपन्यास)
तेलुगु	:	राचपालेम चंद्रशेखर रेड्डी, *मना नवललु-मना कथानिकलु* (साहित्यिक आलोचना)
उर्दू	:	मुनव्वर राना, *शहदाबा* (कविता-संग्रह)

अरूपा पतंगीया कलिता

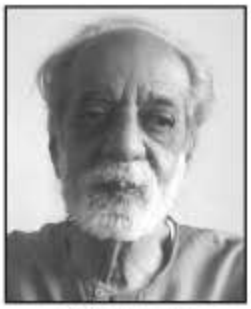

आदिल जसावाला

शाद रमजान

उत्पल कुमार बासु

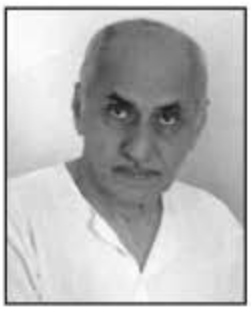

(स्व.) अश्विन मेहता

(स्व.) माधवी सरदेसाय

उखवि गोरा ब्रह्म

रमेशचंद्र शाह

आशा मिश्र

शैलेंद्र सिंह

जी.एच. नायक

सुभाष चंद्रन

नाओरेम विद्यासागर सिंह

जसविंदर

गोप कमल

जयंत विष्णु नारळीकर

रामपाल सिंह राजपुरोहित

पूमणि

नंद हाडखिम

प्रभुनाथ द्विवेदी

राचपालेम चंद्रशेखर रेड्डी

गोपालकृष्ण रथ

जमादार किस्कू

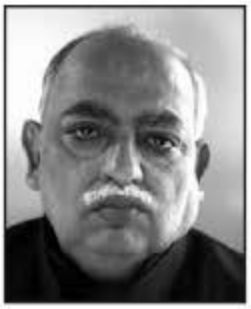

मुनव्वर राना

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2014 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

1. श्री इस्माइल हुसैन
2. श्री येशे दोरजी थोंगची
3. प्रो. सैलेन भराली

बाङ्ला

1. श्री अमिय देव
2. प्रो. अरुण कुमार बसु
3. प्रो. सौरीन भट्टाचार्य

बोडो

1. श्री अरबिंदो उजीर
2. श्री उथरीसर खुनगुर बसुमतारी
3. श्री गोविंद बसुमतारी

डोगरी

1. प्रो. अर्चना केसर
2. प्रो. नीलांबर देव शर्मा
3. डॉ. सुषमा रानी

अंग्रेज़ी

1. डॉ. आलोक भल्ला
2. प्रो. गणेश देवी
3. प्रो. संयुक्ता दासगुप्ता

गुजराती

1. श्री चंद्रकांत टोपीवाला
2. श्री दिलीप झावेरी
3. डॉ. प्रसाद ब्रह्मभट्ट

हिंदी

1. डॉ. नंदकिशोर आचार्य
2. सुश्री नासिरा शर्मा
3. श्री रघुवीर चौधरी

कन्नड

1. डॉ. बी.ए. विवेक राय
2. डॉ. प्रधान गुरुदत्त
3. डॉ. वीरन्ना डांडे

कश्मीरी

1. प्रो. बशर बशीर
2. श्री गुलाम नबी ग़ौहर
3. डॉ. रूपकृष्ण भट्ट

कोंकणी

1. श्री दामोदर माउजो
2. श्री आर.एस. भास्कर
3. श्री उदय एल. भेंब्रे

मैथिली

1. डॉ. देवकांत झा
2. डॉ. सुरेश्वर झा
3. डॉ. शेफालिका वर्मा

मलयाळम्

1. प्रो. चंद्रमती
2. श्री के. जयकुमार
3. प्रो. सारा जोसेफ़

मराठी

1. प्रो. आर.आर. बोरडे
2. श्री वसंत आबाजी डहाके
3. श्रीमती विजयाराजाध्यक्ष

नेपाली

1. श्री शंकर देव ढकाल
2. श्री दुर्गाप्रसाद श्रेष्ठ
3. डॉ. जीवन नामदुंग

ओड़िया

1. डॉ. आदिकंद साहू
2. डॉ. प्रतिभा राय
3. श्री राजेंद्र किशोर पंडा

पंजाबी

1. डॉ. आतमजीत
2. प्रो. सतिंदर सिंह
3. डॉ. वनीता

राजस्थानी

1. प्रो. भंवर सिंह सामौर
2. श्री मोहन आलोक
3. डॉ. शक्तिदान कविया

संताली

1. श्री अर्जुन चरण हेंब्रम
2. श्री पूर्ण चंद्र हेंब्रम
3. श्री रूपचांद हांसदा

सिंधी

1. श्री मोहन गेहानी
2. प्रो. हीरो शेवकानी
3. श्री वासुदेव निर्मल

तमिळ

1. डॉ. इरोड तमिलनबन
2. सुश्री शिवशंकरी
3. श्री पुवियारसु

तेलुगु

1. श्री अंपासय्या नवीन
2. डॉ. केतु विश्वनाथ रेड्डी
3. श्री शशिश्री

उर्दू

1. श्री मो. इदरीस अंबर बहराइची
2. श्री खलील मामून
3. श्री शीन काफ़ निज़ाम

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2014

9 मार्च 2015 को नई दिल्ली में अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2014 के लिए 23 पुस्तकों के चयन को अनुमोदित किया गया। अनुवाद पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चयन संबंधित भाषा में चयन समितियों की अनुशंसा के आधार पर किया गया। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पहले के वर्ष के पाँच वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2008 से 31 दिसंबर 2012 के मध्य) प्रकाशित पुस्तकों पर दिया गया।

अनुवाद पुरस्कार **2014** से सम्मानित अनुवादक

असमिया : बिपुल देउरी, *द इम्मोर्टल्स ऑफ़ मेलुहा* (*द इम्मोर्टल्स ऑफ़ मेलुहा,* अंग्रेज़ी (उपन्यास)—अमिश त्रिपाठी)

बाङ्ला : विनय कुमार माहाता *एइ पृथिबी पागलागारद* (*ई बतहा संसार,* मैथिली (उपन्यास)—सुधांशु 'शेखर' चौधरी)

बोडो : सुरथ नार्ज़ारी, *गीतांजलि* (*बाङ्ला* (कविता-संग्रह)—रवींद्रनाथ ठाकुर)

डोगरी : यशपाल 'निर्मल', *मियां डीडो* (*डीडो जम्वाल,* पंजाबी (नाटक)—कृपा सागर)

अंग्रेज़ी : पद्मिनी राजप्पा, *कादंबरी* (*कादंबरी,* संस्कृत (उपन्यास)—बाणभट्ट)

गुजराती : (स्व.) नगीनदास जीवनलाल शाह, *तर्करहस्यदीपिका* (*तर्करहस्यदीपिका,* संस्कृत (निबंध-संग्रह)—गुणरत्न सूरी)

हिंदी : फूलचंद मानव, *अन्नदाता,* (*अन्नदाता,* पंजाबी (उपन्यास)—बलदेव सिंह)

कन्नड : जी.एन. रंगनाथ राव, *मोहन दास : ऑनदू सत्यकथे* (*मोहनदास,* ए ट्रू स्टोरी ऑफ़ ए मैन, हिज़ पीपुल एंड ऐन एंपायर (अंग्रेज़ी)—(जीवनी—राजमोहन गाँधी)

कश्मीरी : एम.एच. ज़फर, *शिव सूत्र* (*शिव सूत्र,* संस्कृत (निबंध-संग्रह)—वसुगुप्त रेशी)

कोंकणी : पांडुरंग काशिनाथ गावडे, *उचल्या* (*उचल्या,* मराठी (आत्मकथा)—लक्ष्मण गायकवाड)

मैथिली : राम नारायण सिंह, *मलाहिन,* (*चेम्मीन,* मलयाळम् (उपन्यास)—तकषी शिवशंकर पिल्लै)

मलयाळम् : प्रिया ए. एस., *कुंज कार्यंगलुदे ओदेथमपुरन,* (*द गॉड ऑफ स्माल थिंग्स,* अंग्रेज़ी (उपन्यास)—अरुंधती रॉय)

मणिपुरी : इबोतोम्बी 'मङ्गाङ्, *हि ईराकपा,* (*नौका डुबी,* बाङ्ला/हिंदी (उपन्यास)—रवींद्रनाथ ठाकुर)

मराठी : मधुकर सुदाम पाटिल, *स्मृतिभ्रंशानंतर,* (*ऑफ़्टर अम्नेशिया,* (अंग्रेज़ी)—साहित्यिक आलोचना—गणेश एन. देवी)

नेपाली : डंबरमणि प्रधान, *मलाई जून चाहिन्छ,* (*मुझे चाँद चाहिए,* हिंदी (उपन्यास)—सुरेंद्र वर्मा)

ओड़िया : रवींद्र कुमार प्रहराज, *थिलाघरर गेल्हापूअ,* (*अलालेर घरेर दुलाल,* बाङ्ला (उपन्यास)—टेकचाँद ठाकुर)

पंजाबी : तरसेम, *मन दा मन्नुख,* (*मनेर मानुष,* बाङ्ला (उपन्यास)—सुनील गंगोपाध्याय)

राजस्थानी : कैलाश मंडेला, *कुरल-काव्य,* (*तिरुक्कुरल,* तमिळ (कविता-संग्रह)—संत तिरुवल्लुवर)

संस्कृत : नारायणदाश, *वात्यासारः,* (*झड़ ओ अन्यान्य गल्प,* ओड़िया (कहानी-संग्रह)—चंद्रशेखर दासवर्मा)

संताली : सारो हांसदाः, *देवदास,* (*देवदास,* बाङ्ला (उपन्यास)—शरतचंद्र चट्टोपाध्याय)

सिंधी : राम कुकरेजा, *मरू तीर्थ हिंगलाज,* (*मरू तीर्थ हिंगलाज,* बाङ्ला (यात्रा-वृत्तांत—अवधूत))

तमिळ : एस. देवदास, *लदाक्किलरूंदु कविळुम निग़ल,* (*शैडो फ्रॉम लद्दाख,* अंग्रेज़ी, (उपन्यास)—भवानी भट्टाचार्य)

तेलुगु : आर. शांता सुंदरी, *इंतलो प्रेमचंद,* (*प्रेमचंद घर में,* हिंदी (जीवनी)—शिवरानी देवी)

उर्दू : वेद राही, *ललद्यद,* (*ललद्यद,* डोगरी (उपन्यास)—वेद राही)

संताली भाषा का पुरस्कार बाद में घोषित किया गया।

विपुल देउरी

पद्मिनी राजप्पा

एम.एच. जफ़र

विनय कुमार माहाता

(स्व.) नगीनदास जीवनलाल शाह

पांडुरंग काशिनाथ गावडे

सुरथ नार्ज़ारी

फूलचंद मानव

राम नारायण सिंह

यशपाल निर्मल

जी.एन. रंगनाथ राव

प्रिया ए. एस.

वाइखोम चा इबोतोंबी मइगाइ

तरसेम

राम कुकरेजा

मधुकर सुदाम पाटिल

कैलाश मंडेला

एस. देवदास

डंबरमणि प्रधान

नारायण दाश

आर. शांता सुंदरी

रवींद्रकुमार प्रहराज

सारो हांसदाः

वेद राही

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2014 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया
1. डॉ. ध्रुव ज्योति बोरा
2. सुश्री लुत्फा हनम सलीमा बेगम
3. डॉ. प्रदीप ज्योति महंत

बाङ्ला
1. प्रो. जयंती चट्टोपाध्याय
2. डॉ. सोमा बंद्योपाध्याय
3. श्री उज्जल सिंह

बोडो
1. श्री विशेश्वर बसुमतारी
2. डॉ. अनिल कुमार बोरो
3. सुश्री शांति बसुमतारी

डोगरी
1. प्रो. चंपा शर्मा
2. श्री ज्ञानेश्वर शर्मा
3. श्रीमती विजया ठाकुर

अंग्रेज़ी
1. प्रो. अनीसुर रहमान
2. सुश्री अरुणा चक्रवर्ती
3. डॉ. सुधाकर मराठे

गुजराती
1. डॉ. नलिनी मडगांवकर
2. श्री सुमन शाह
3. सुश्री वर्षा दास

हिंदी
1. डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय
2. श्री रामशंकर द्विवेदी
3. प्रो. सत्यपॉल सहगल

कन्नड
1. डॉ. एच.एस. वेंकटेश मूर्ति
2. प्रो. के.एस. भगवान
3. डॉ. राजेंद्र चेन्नी

कश्मीरी
1. डॉ. मिशल सुलतानपुरी
2. डॉ. ओ. एन. कौल
3. प्रो. रतन तलाशी

कोंकणी
1. डॉ. हरिश्चंद्र नागवेकर
2. श्री मेल्विन रोड्रिग्स
3. श्री एन. शिवदास

मैथिली
1. डॉ. अमरनाथ झा
2. प्रो. बासुकीनाथ झा
3. डॉ. सत्यानंद पाठक

मलयाळम्
1. डॉ. एम.एम. बशीर
2. प्रो. पी.पी. रवींद्रन
3. श्री पॉल ज़कारिया

मणिपुरी
1. श्री ए. बीरेन सिंह
2. डॉ. के. शांतिबाला देवी
3. श्री एल. जोयचंद्र सिंह

मराठी
1. श्री दामोदर खडसे
2. प्रो. निशिकांत ठकार
3. श्रीमती प्रभा गनोरकर

नेपाली
1. श्री अर्जुन प्रधान
2. डॉ. संजय बांतवा
3. श्री लक्ष्मण श्रीमल

ओड़िया
1. डॉ. विभूति पटनायक
2. प्रो. गिरिबाला मोहांति
3. डॉ. कालिदास मिश्र

पंजाबी
1. डॉ. ब्रजिंदर चौहान
2. श्री ख़ालिद हुसैन
3. प्रो. सतीश कुमार वर्मा

राजस्थानी
1. डॉ. चंद्रप्रकाश देवल
2. श्री जेठमल मारू
3. डॉ. ज्योति पुंज

संस्कृत
1. प्रो. अशोक कुमार कालिया
2. प्रो. सी. राजेंद्रन
3. डॉ. श्रीनिवास वाराखेड़ी

संताली
1. श्री चैतन्य प्रसाद माझी
2. श्री रामचंद्र मुर्मू
3. श्री सूर्य सिंह बेसरा

सिंधी
1. डॉ. जेठो लालवाणी
2. श्री लक्ष्मण दुबे
3. डॉ. कमला गोकलाणी

तमिऴ
1. डॉ. एच. बालसुब्रह्मण्यम
2. श्री इंदिरान
3. डॉ. तमिष़वन कार्लोस

तेलुगु
1. श्री ए. कुटुंब राव
2. डॉ. चागंती तुलसी
3. श्री वाई. लक्ष्मी प्रसाद

उर्दू
1. श्री एफ़. एस. एजाज़
2. श्री प्रीतपाल सिंह बेताब
3. डॉ. शहज़ाद अंजुम

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2014

22 अगस्त 2014 को गुवाहाटी में अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में बाल साहित्य पुरस्कार 2014 के लिए 15 पुस्तकों तथा समग्र योगदान के लिए 8 लेखकों के चयन को अनुमोदित किया गया। यह अनुमोदन इस उद्देश्य के लिए गठित संबंधित भाषाओं की चयन समितियों की अनुशंसा के आधार पर किया गया। संस्कृत भाषा में कोई पुरस्कार नहीं दिया गया। ये पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पहले के वर्ष के पूर्ववर्ती पाँच वर्षों (अर्थात् 1 जनवरी 2008 से 31 दिसंबर 2012 के मध्य) प्रकाशित पुस्तकों पर दिए गए। लेकिन आरंभिक पाँच वर्षों, जो 2010-2014 है, के लिए पुरस्कार बाल साहित्य के क्षेत्र में लेखक के समग्र योगदान के लिए दिए जा सकते हैं, यदि कोई पुस्तक पुरस्कार के योग्य नहीं है।

बाल साहित्य पुरस्कार **2014** से सम्मानित लेखक

असमिया : दिनेश चंद्र गोस्वामी, *विज्ञानर अनुपम जगत* (निबंध-संग्रह)
बाङ्ला : गौरी धर्मपाल, *बाल साहित्य में समग्र योगदान हेतु*
बोडो : कौशल्या ब्रह्म, *गथ'साफोरनि राव* (कविता-संग्रह)
डोगरी : ध्यान सिंह, पढ़दे ञ्याणें गुढ़दे स्याने (कविता-संग्रह)
अंग्रेज़ी : सुभद्रा सेनगुप्त, *बाल साहित्य में समग्र योगदान हेतु*
गुजराती : ईश्वर परमार, *बाल साहित्य में समग्र योगदान हेतु*
हिंदी : दिनेश चमोला 'शैलेश', *गाएँ गीत ज्ञान-विज्ञान के* (कविता-संग्रह)
कन्नड : आनंद व. पाटील, *बाल साहित्य में समग्र योगदान हेतु*
कश्मीरी : हामिद सिराज, *हारी जंग* (उपन्यास)
कोंकणी : सूर्या अशोक, *भुरग्यांलो संसार* (कहानी-संग्रह)
मैथिली : (स्व.) जीवकांत, *हमर अठन्नी खसलइ वनमे* (कविता-संकलन)
मलयाळम् : के.वी. रामनाथन, *बाल साहित्य में समग्र योगदान हेतु*
मणिपुरी : राजकुमार भूबनसना, *सना कोकचो अमसूङ भूत निङथउ* (कहानी-संग्रह)
मराठी : माधुरी पुरंदरे, *बाल साहित्य में सम्रग योगदान हेतु*
नेपाली : मुन्नी सापकोटा, *जूनकीरी* (कहानी-संग्रह)
ओड़िया : दास बेनहुर, *बाल साहित्य में समग्र योगदान हेतु*
पंजाबी : कुलबीर सिंह सूरी, *राजकुमार दा सुपना* (कहानी-संग्रह)
राजस्थानी : नीरज दइया, *जादू रो पेन* (कहानी-संग्रह)
संताली : कानाइलाल टुडु, *बचरा बयार* (कविता-संग्रह)
सिंधी : वासुदेव 'सिंधु-भारती', *बाल साहित्य में समग्र योगदान हेतु*
तमिऴ : इरा. नटरासन, *विज्ञान विक्रमादितन कथैकळ* (कहानी-संग्रह)
तेलुगु : दासरि वेंकटरमण, *आनंदम* (कहानी-संग्रह)
उर्दू : महेबूब राही, *रंगारंग फुलवारी* (कविता-संग्रह)

इस वर्ष संस्कृत भाषा में पुरस्कार नहीं है

दिनेश चंद्र गोस्वामी

सुभद्रा सेनगुप्त

हामिद सिराज

गौरी धर्मपाल

ईश्वर परमार

सूर्या अशोक

कौशल्या ब्रह्म

दिनेश चमोला 'शैलेश'

(स्व.) जीवकांत

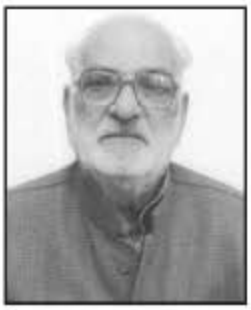
ध्यान सिंह

आनंद व. पाटील

के.वी. रामनाथन

राजकुमार भूबनसना

कुलबीर सिंह सूरी

वासुदेव 'सिंधु-भारती'

माधुरी पुरंदरे

नीरज दइया

इरा. नटरासन

मुन्नी सापकोटा

कानाइलाल टुडु

दासरि वेंकटरमण

दास वेनहुर

महेबूब राही

बाल साहित्य पुरस्कार 2014 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

1. श्री अनुभव तुलसी
2. डॉ. मुकुल हजारिका
3. श्री समीर ताँती

बाङ्ला

1. श्री अमर मित्र
2. सुश्री अनिता अग्निहोत्री
3. प्रो. शिवाजी बंद्योपाध्याय

बोडो

1. श्रीमती अंजलि प्रभा दैमारि
2. श्री विद्यासागर नार्जारी
3. श्री जगत चंद्र बसुमतारी

डोगरी

1. श्री जितेंद्र उधमपुरी
2. श्री शमशेर सिंह
3. श्री सुदर्शन रतनपुरी

अंग्रेज़ी

1. सुश्री गीता धर्मराजन
2. प्रो. के.सी बराल
3. प्रो. सुप्रिया चौधुरी

गुजराती

1. डॉ. चिनु मोदी
2. श्री कांजी पटेल
3. प्रो. श्रद्धा त्रिवेदी

हिंदी

1. डॉ. कमल किशोर गोयनका
2. श्री राजेश जोशी
3. डॉ. विनोद चंद्र पांडे 'विनोद'

कन्नड

1. डॉ. करिगौडा बीचनहल्ली
2. प्रो. मल्लिका एस. घंटी
3. श्री विष्णु नायक

कश्मीरी

1. डॉ. अज़ीज़ हाजिनी
2. श्री मो. अहसान अहसान
3. श्री सतीश विमल

कोंकणी

1. श्री बस्ती वामन शिनॉय
2. डॉ. एल. सुनीता बाई
3. श्री माधव बोरकर

मैथिली

1. डॉ. धीरेंद्रनाथ मिश्र
2. डॉ. इंद्रकांत झा
3. डॉ. प्रभास कुमार झा

मलयाळम्

1. प्रो. के.जी. शंकर पिल्लै
2. सुश्री के.आर. मीरा
3. डॉ. पुद्दुस्सेरी रामचंद्रन

मणिपुरी

1. प्रो. एच. नोनीकुमार सिंह
2. प्रो. आई.एस. काङजम
3. सुश्री येङखोम इंदिरा देवी

मराठी

1. श्री अनिल अवचट
2. श्री गंगाधर पानतावणे
3. डॉ. वसंत एस. पाटणकर

नेपाली

1. श्री केदार गुरुंग
2. श्री कृष्ण प्रधान
3. प्रो. एन. बी. राइ

ओडिया

1. डॉ. अर्चना नायक
2. डॉ. संघमित्रा मिश्र
3. श्री शांतनु कुमार आचार्य

पंजाबी

1. डॉ. अमरजीत कौर
2. श्री गुलज़ार सिंह संधू
3. डॉ. जगबीर सिंह

राजस्थानी

1. डॉ. चेतन स्वामी
2. डॉ. मंगत बादल
3. श्री मीठेश निर्मोही

संस्कृत

1. डॉ. बलराम शुक्ल
2. डॉ. रमा शंकर मिश्र
3. प्रो. के. रामसूर्य नारायण

संताली

1. श्री भूजूराम मुर्मू
2. श्री चंडी चरण किस्कु
3. श्री मंगल माझी

सिंधी

1. डॉ. मोती प्रकाश
2. श्री झामू छुगाणी
3. सुश्री इंदिरा पूनावाला

तमिळ

1. डॉ. ए. एलिस
2. डॉ. सिर्पी बालसुब्रमणियम
3. डॉ. वी. आरसु

तेलुगु

1. श्रीमती डी. सुजाता देवी
2. श्री सैयद सलीम
3. प्रो. शरतज्योत्स्ना रानी

उर्दू

1. डॉ. अब्दुस्समद
2. श्री मोहम्मद अशरफ़
3. श्री के.एल. नारंग साक़ी

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2014

22 अगस्त 2014 गुवाहाटी में प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2014 के लिए 21 पुस्तकों के चयन को अनुमोदित किया गया। युवा पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चयन संबंधित भाषा चयन समितियों की अनुशंसा के आधार पर किया गया। नियमानुसार, कार्यकारी मंडल ने निर्णायक समिति के सर्वसम्मत अथवा बहुमत से की गई संस्तुति के आधार पर पुरस्कार घोषित किए। ये पुरस्कार उन लेखकों की पुस्तकों को दिए जाते हैं, जिनकी उम्र पुरस्कार वर्ष की 1 जनवरी को 35 वर्ष अथवा उससे कम हो।

युवा पुरस्कार **2014** से सम्मानित लेखक

असमिया : मणिका देवी, *जहर-महर* (कहानी-संग्रह)
बाङ्ला : अभिमन्यु माहात, *माटि* (कविता-संग्रह)
बोडो : शांति बसुमतारी, *थैनिखुइबो गोजासिन नोंनि गाबा* (कविता-संग्रह)
अंग्रेज़ी : कौशिक बरुआ, *विंडहॉर्स* (उपन्यास)
गुजराती : अनिल चावडा, *सवार लईने* (ग़ज़ल-संग्रह)
हिंदी : कुमार अनुपम, *बारिश मेरा घर है* (कविता-संग्रह)
कन्नड : काव्यश्री कदमे, *ध्यानक्के तारीखिना हंगिल्ला* (कविता-संग्रह)
कोंकणी : नरेश चंद्रकांत नायक, *गाँवमन* (कहानी-संग्रह)
मैथिली : प्रवीण काश्यप, *विषदंती वरमाल कालक रति* (कविता-संग्रह)
मलयाळम् : इंदु मेनन, *चुंबन शब्दतारावली* (कहानी-संग्रह)
मणिपुरी : वाङ्थोई खुमन, *डायोन्बा अशैबा* (कविता-संग्रह)
मराठी : अवधूत डोंगरे, *स्वतःला फालतू समजण्याची गोष्ट* (उपन्यास)
नेपाली : टीका 'भाइ', *पैतालातल्तिर* (कविता-संग्रह)
ओड़िया : नरेंद्र कुमार भोइ, *पिड़ा पर्व* (कविता-संग्रह)
पंजाबी : गगन दीप शर्मा, *इकल्ला नहीं हुंदा बंदा* (कविता-संग्रह)
राजस्थानी : राजूराम बिजारणियाँ 'राज', *चाल भतूळिया रेत रमां* (कविता-संग्रह)
संस्कृत : परांबा श्रीयोगमाया, *संपर्कः* (कहानी-संग्रह)
संताली : आनूपा मार्रंडि, *नामाल* (कविता-संग्रह)
तमिळ : आर. अभिलाष, *कालकळ* (उपन्यास)
तेलुगु : अप्पिरेड्डी हरिनाथ रेड्डी, *सीमा सहिती स्वरम श्री साधना पत्रिका* (साहित्यिक आलेख संग्रह)
उर्दू : इल्तेफात अमजदी, *चिकने पात* (कविता-संग्रह)

(इस वर्ष डोगरी, कश्मीरी तथा सिंधी भाषा में पुरस्कार नहीं है)

मणिका देवी

अनिल चावडा

नरेश चंद्रकांत नायक

अभिमन्यु माहात

कुमार अनुपम

प्रवीण काश्यप

शांति वसुमतारी

इंदु मेनन

कौशिक बरुआ

काव्यश्री कदमे

वाङ्थोई खुमन

अवधूत डोंगरे

राजूराम बिजारणियाँ 'राज'

आनूपा मारेंडि

टीका 'भाई'

आर. अभिलाष

नरेंद्र कुमार भोइ

परांबा श्रीयोगमाया

अप्पिरेड्डी हरिनाथ रेड्डी

गगनदीप शर्मा

इल्तेफात अमजदी

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2014 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

1. प्रो. मदन मोहन शर्मा
2. सुश्री निरुपमा बरगोहाईं
3. श्री कुल सैकिया

बाङ्ला

1. श्री प्रणव कुमार मुखोपाध्याय
2. श्री शमिक बंद्योपाध्याय
3. श्री उज्ज्वल कुमार मजुमदार

बोडो

1. डॉ. इंदिरा बोरो
2. श्री भूपेंद्र नार्जारी
3. श्री समीरन ब्रह्म

अंग्रेज़ी

1. सुश्री अरुंधति सुब्रह्मणियम
2. डॉ. कावेरी नंबिसन
3. प्रो. तेमसुला आओ

गुजराती

1. डॉ. दर्शना सी. ढोलकिया
2. श्री जयदेव शुक्ल
3. श्री सतीश व्यास

हिंदी

1. डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल
2. डॉ. उर्मिला शिरीष
3. डॉ. लीलाधर मंडलोई

कन्नड

1. श्री सी.एन. रामचंद्रन
2. डॉ. बसवराज दोनुर
3. प्रो. चंद्रशेखर पाटिल

कोंकणी

1. श्री अरुण साखरदंडे
2. श्री शरतचंद्र शिनॉय
3. श्री नागेश करमाली

मैथिली

1. श्री गंगेश गुंजन
2. श्री कमलकांत झा
3. डॉ. ताराकांत झा

मलयाळम्

1. श्री अकबर कक्कातिल
2. डॉ. वी. राजकृष्णन
3. श्री टी. एन. प्रकाश

मणिपुरी

1. श्री खुमंथेम प्रकाश सिंह
2. श्री रघु लेशङथम
3. प्रो. आर.के. जितेंद्रजित सिंह

मराठी

1. डॉ. चंद्रकांत पाटिल
2. डॉ. हरीशचंद्र थोराट
3. श्री लक्ष्मण गायकवाड़

नेपाली

1. श्री गोपीचंद्र प्रधान
2. डॉ. जीवन राणा
3. श्री सानु लामा

ओड़िया

1. डॉ. मालविका राय
2. श्री मनोज कुमार पंडा
3. श्री राजकिशोर मिश्र

पंजाबी

1. श्री बलविंदर सिंह ग्रेवाल
2. डॉ. दर्शन बुट्टर
3. डॉ. कुलजीत शैली

राजस्थानी

1. डॉ. मदन सैनी
2. श्री माधव नागदा
3. डॉ. सत्यनारायण

संस्कृत

1. डॉ. एन.पी. उन्नी
2. श्री नारायण दाश
3. प्रो. वी.एन. झा

संताली

1. श्री भजहरि टुडु
2. श्री पृथ्वी माझी
3. श्री सनत हांसदा

तमिळ

1. डॉ. नॉजिल नाडन
2. श्री प्रपंचन
3. डॉ. रमा गुरुनाथन

तेलुगु

1. डॉ. वादरेवू वीरा लक्ष्मी देवी
2. श्री कृष्ण राव
3. श्री सिंगमानेनी नारायण

उर्दू

1. डॉ. ग़ज़नफ़र अली
2. श्री इक़बाल मसूद
3. डॉ. शाहिना तबस्सुम

कार्यक्रम

साहित्योत्सव 2015

साहित्योत्सव 2015 का आयोजन 9-14 मार्च 2015 के दौरान दिल्ली में मेघदूत मुक्ताकाश रंगशाला, कमानी सभागार, रवींद्र भवन लॉन तथा साहित्य अकादेमी सभागार में व्यापक पैमाने पर किया गया। साहित्योत्सव में देश भर के सभी उम्र के लेखकों की सहभागिता सुनिश्चित करने का प्रयत्न किया गया। साहित्योत्सव में अकादेमी प्रदर्शनी 2014, अकादेमी पुरस्कार 2014 अर्पण समारोह, लेखक सम्मिलन, संवत्सर एवं स्थापना दिवस व्याख्यान, आमने-सामने, लोक : विविध स्वर, नृत्य प्रस्तुति पूर्वोत्तरी : पूर्वोत्तर एवं उत्तर भारत के लेखकों का सम्मिलन, युवा साहिति : युवा लेखकों का सम्मिलन, बालसाहिति : बच्चों और किशोरों के लिए कार्यक्रम, अलिखित भाषाओं पर परिसंवाद तथा 'भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र तथा राष्ट्र' विषयक संगोष्ठी जैसे कार्यक्रम समाहित थे।

अकादेमी प्रदर्शनी 2014 का उद्घाटन

साहित्य अकादेमी की वार्षिक प्रदर्शनी 2014 का उद्घाटन 9 मार्च 2015 को रवींद्र भवन लॉन, नई दिल्ली में प्रख्यात हिंदी साहित्यकार डॉ. रामदरश मिश्र द्वारा किया गया।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि "देश की प्रत्येक भाषा, अपने प्रदेश के साथ-साथ देश के जनजीवन को अंकित करती है और अनेकता में एकता के हमारे सूत्र को मज़बूती प्रदान करती है। साहित्य अकादेमी सभी भारतीय भाषाओं के मिलन का मंच है। इन भाषाओं के संवाद से ही पाठकों का विस्तार होता है।"

अकादेमी प्रदर्शनी 2014 का उद्घाटन करते हुए डॉ. रामदरश मिश्र

डॉ. रामदरश मिश्र का स्वागत करते हुए प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि साहित्य अकादेमी अपने कार्यक्रम जन-जन तक और छोटे-से-छोटे क़स्बे तक पहुँचाना चाहती है। पिछले वर्ष की हमारी उपलब्धियाँ इसी का प्रमाण है। हमने विगत वर्षों से लगभग दुगुने कार्यक्रम इस वर्ष किए हैं।

इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने साहित्य अकादेमी के पिछले वर्ष की उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि अकादेमी ने पिछले वर्ष 467 कार्यक्रम किए, जिसमें 2360 लेखकों/विद्वानों ने भाग लिया। यानी प्रत्येक 19 घंटे में एक कार्यक्रम और 569 किताबें, यानी प्रत्येक 16 घंटे में एक पुस्तक प्रकाशित हुई। वर्ष के दौरान 186 पुस्तक प्रदर्शनियाँ आयोजित की गईं, जिसमें तीन अंतर्राष्ट्रीय थीं। उन्होंने बताया कि साहित्य अकादेमी द्वारा कुछ नए कार्यक्रमों को शुरू किया गया है जैसे -- भाषांतर अनुभव, नारी चेतना आदि, जो काफ़ी पसंद किए गए हैं।

इसके बाद दीप प्रज्वलित कर प्रदर्शनी का शुभारंभ किया गया। इस प्रदर्शनी में पिछले वर्ष के साहित्योत्सव

अकादेमी प्रदर्शनी 2014 का एक दृश्य

के चित्रों के साथ देशभर में कार्यक्रमों के आयोजित महत्त्वपूर्ण चित्रों को प्रदर्शित किया गया। इसमें लगाई गई पुस्तक प्रदर्शनी में अकादेमी द्वारा प्रकाशित 24 भारतीय भाषाओं की पुस्तकें अवलोकन और बिक्री के लिए उपलब्ध थीं।

वर्ष 2014 के अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित पुस्तकें भी दर्शकों के अवलोकनार्थ रखी गई थीं।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2014 अर्पण समारोह

कमानी सभागार, नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में 9 मार्च 2015 को साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2014 अर्पण समारोह संपन्न हुआ। 24 भारतीय भाषाओं में प्रतिवर्ष दिए जाने वाले इस प्रतिष्ठित पुरस्कार में एक लाख रुपए का चेक और उत्कीर्ण ताम्र फलक प्रदान किए जाते हैं। पुरस्कृत लेखकों को पुरस्कार अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा प्रदान किए गए। अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री चंद्रशेखर कंबार द्वारा पुष्पहार एवं पुष्पगुच्छ प्रदान किए गए। पुरस्कृत बाङ्ला लेखक उत्पल कुमार बासु और अंग्रेज़ी लेखक आदिल जसावाला अस्वस्थ होने के कारण नहीं आ सके। उनकी जगह यह पुरस्कार उनके परिजनों ने ग्रहण किए।

इस अवसर पर अपने वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि सभी पुरस्कृत लेखक हमारे लोक की आवाज़ हैं। साहित्य मौन को मुखर करता है और सन्नाटे को शब्द देता है। साहित्य ने गाँधी जी से पहले स्वदेशी और निज भाषा का नारा दिया था। आगे उन्होंने कहा कि सत्ता कोई भी हो, चाहे वह धर्म की सत्ता हो, राजसत्ता हो या विचारों की, वह जनविरोधी रूप अख़्तियार कर लेती है।

आज हम तकनीकी रूप से सक्षम तो हुए हैं, किंतु तकनीक भाव विरोधी होते हैं। भाव को साहित्य ही बचा सकता है। उन्होंने पूरे देश में मनाए जा रहे साहित्योत्सवों की भीड़ में साहित्य अकादेमी के इस गंभीर उत्सव की प्रशंसा करते हुए सभी पुरस्कृत लेखकों को बधाई दी।

पुरस्कार समारोह के अंत में मुख्य अतिथि प्रो. केदारनाथ सिंह ने सभी पुरस्कृत रचनाकारों को बधाई देते हुए कहा कि भारतीय सृजन की विलक्षण विविधता

साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता 2014

असमिया पुरस्कार विजेता को पुष्प-गुच्छ भेंट करते हुए अकादेमी के उपाध्यक्ष

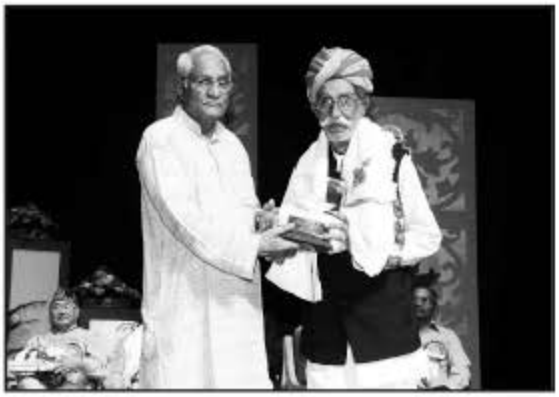

राजस्थानी पुरस्कार विजेता के साथ अकादेमी के अध्यक्ष

ही हमारी सबसे बड़ी विशेषता है। आगे उन्होंने कहा कि भारतीय साहित्य बीसवीं सदी के हैंगओवर से निकलकर नए रास्ते खोज रहा है और इस नए रास्ते का सूर्योदय पूर्वोत्तर से हो रहा है। उन्होंने अलक्षित भाषाओं और उनके साहित्य पर ध्यान दिए जाने की ज़रूरत पर बल दिया और साहित्य अकादेमी की प्रशंसा करते हुए कहा कि अकादेमी इन सबके विकास के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण काम कर रही है।

कार्यक्रम के प्रारंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अकादेमी की उपलब्धियों की चर्चा करते

पुरस्कार अर्पण समारोह में मणिपुरी नृत्य प्रस्तुति

हुए लेखकों और उपस्थित श्रोताओं का स्वागत किया। उन्होंने साहित्य अकादेमी की साठ वर्षों की संपूर्ण सफल यात्रा को रेखांकित करते हुए भारतीय भाषाओं के लेखकों की महत्त्वपूर्ण सामाजिक भूमिका का उल्लेख किया।

कार्यक्रम के अंत में अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री चंद्रशेखर कंबार ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

लेखक सम्मिलन

10 मार्च 2014, नई दिल्ली

वर्ष 2014 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित लेखकों ने अपने रचनात्मक अनुभवों को श्रोताओं से साझा किया। कार्यक्रम के आरंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए कार्यक्रम की अध्यक्षता के लिए अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री चंद्रशेखर कंबार को आमंत्रित किया।

असमिया लेखिका अरूपा पंतगीया कलिता ने कहा कि उन्हें लोगों के जीवन में दुःख और निराशा ने हमेशा परेशान किया और उन्होंने उन लोगों पर लिखा जो अपने जीवन में सामान्य चीज़ों से भी वंचित हैं।

बोडो लेखक उर्खाव गोरा ब्रह्म ने कहा, मैं अपने लेखन में पत्रकारिता के ढाँचे का इस्तेमाल करता हूँ, जिसका उद्देश्य दुनिया या समाज के समक्ष अपनी कहानी प्रस्तुत करना होता है।

हिंदी के पुरस्कृत लेखक रमेशचंद्र शाह ने कहा कि लिखना मेरे लिए साँस लेने की तरह अनिवार्य कर्म है। अर्थहीनता और मूल्य वंचना के इस घटाटोप से जूझे बिना न साहित्य का भला होगा, न साहित्यकार का। साहित्य समग्र अस्तित्व की चिंता करता है।

मैथिली के लिए पुरस्कृत आशा मिश्र ने अपने उपन्यास *उचाट* के बारे में बताते हुए कहा कि मेरी यह कृति खोए हुए बच्चों या किसी कारणवश अपने माँ-बाप से बिछुड़ गए बच्चों पर केंद्रित है।

पंजाबी लेखक जसविंदर ने कहा कि मेरे अंदर जितनी भी संवेदना है, वह मेरी मरहूम माँ की ख़्वाहिश है। यही कारण है कि मैं कविता की ओर अग्रसर हुआ।

राजपाल सिंह राजपुरोहित (राजस्थानी) ने कहा कि मैं यह दिखावा नहीं करता कि इस उम्र में पुरस्कार से

पुरस्कार विजेताओं का स्वागत करते हुए डॉ. के. श्रीनिवासराव

प्रो. रमेशचंद्र शाह

श्री जसविंदर सिंह

श्री राचपालेम चंद्रशेखर रेड्डी

मुझे विशेष प्रसन्नता नहीं हुई बल्कि यह स्वीकार करता हूँ कि इस निर्णय से मेरा मन एवं आत्मा झूम उठी है।

तेलुगु के लिए पुरस्कृत राचपालेम चंद्रशेखर रेड्डी ने कहा एक साहित्यिक समालोचक के रूप में उनका विश्वास है कि साहित्य कलात्मक तथा सामाजिक यथार्थ का समालोचनात्मक प्रतिबिंब होना चाहिए।

डोगरी के लिए पुरस्कृत शैलेंद्र सिंह ने अपने पुरस्कृत उपन्यास *हाशिये* पर के कथानक और रचना प्रक्रिया के बारे में बताया।

कन्नड के लिए पुरस्कृत जी.एच. नायक ने कहा कि अगर कोई आलोचक सच्चे स्वर में अपनी बात कहना चाहता है तो उसके समक्ष कई तरह की चुनौतियाँ एवं कठिनाइयाँ सामने आती हैं।

कश्मीरी के लिए पुरस्कृत शाद रमज़ान ने कश्मीरी और संस्कृत के महान रचनाकारों का उल्लेख किया और सूफ़ी परंपरा को भी संदर्भित किया। उन्होंने माँग की कि कश्मीरी को क्लासिकल भाषा का दर्ज़ा दिया जाना चाहिए।

नेपाली के लिए पुरस्कृत नंद हाडखिम ने कहा कि कोई भी सर्जनात्मक कला प्रकृति, प्रदेश और जीवन से दूर नहीं जा सकती। सृजनात्मक कला न केवल एक विशेष देश और काल के समय को चित्रित करती है बल्कि एक तरह का बोध भी प्रदान करती है।

ओड़िया के लिए पुरस्कृत गोपालकृष्ण रथ ने कहा कि अपने कविता संकलनों में वे अपने जीवनानुभव के प्रति पूरी तरह सत्यनिष्ठ हैं।

श्री मुनव्वर राना

संस्कृत के लिए पुरस्कृत प्रभुनाथ द्विवेदी ने कहा कि यह पुरस्कार मिलने से मेरा दायित्त्व लोक और साहित्य के प्रति पहले से अधिक बढ़ गया है।

मलयाळम् के लिए पुरस्कृत सुभाष चंद्रन ने कहा कि मेरा विश्वास है कि हमारे महान बुद्धिजीवियों ने विभिन्न कालखंडों में आलोक के जो बीज बोए हैं वे अंधकार के एक दूसरे युग में हम जैसे नए लेखकों के रूप में उगेंगे।

मणिपुरी के लिए पुरस्कृत नाओरेम विद्यासागर सिंह ने कहा कि वर्तमान समय में कविता लिखना एक कठिन कार्य है। किसी की अनुभूतियों और विचारों की अभिव्यक्ति ही पर्याप्त नहीं है।

सिंधी के लिए पुरस्कृत गोप कमल ने कहा कि उन्होंने गद्य के कई साहित्यिक रूपों को लेकर प्रयोग किए लेकिन ग़ज़ल विधा में वे अपने को सहज महसूस करते हैं।

उर्दू के लिए पुरस्कृत लोकप्रिय शायर मुनव्वर राना ने कहा कि रचनाकारों को पुरस्कार जवानी में ही मिल जाने चाहिए; क्योंकि जो लेखक 40 साल में अच्छा लिख रहा है, वह अंत में भी अच्छा ही लिखेगा। इससे पुरस्कृत लेखक को और अच्छा और बेहतर लिखने की प्रेरणा मिलेगी।

डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने समाहार वक्तव्य देते हुए एक बार पुनः सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी।

आशीष नंदी द्वारा संवत्सर व्याख्यान

प्रख्यात समालोचक, सामाजिक, सिद्धांतवादी, राजनीतिक मनोविश्लेषक डॉ. आशीष नंदी ने 10 मार्च 2015 को रवींद्र भवन परिसर में संवत्सर व्याख्यान दिया। व्याख्यान का विषय था -- 'क्या हम सांस्कृतिक विविधता की रक्षा करते हैं अथवा सांस्कृतिक विविधता हमारी रक्षा करती है?-- हमारे समय में संस्कृति की राजनीति'। उन्होंने कहा कि समय, क्षेत्र और समुदायों के साथ मूल्य परिवर्तित होते हैं। किसी भी समाज में मूल्यों के परिवर्तित होने से विरोधाभास भी जन्म लेते हैं। उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक विविधता पर विभिन्न स्रोतों द्वारा प्रहार किए जाते हैं और वे ऐसे स्रोतों की सूची बना रहे हैं। डॉ. नंदी ने विकास को भी सांस्कृतिक विविधता पर आक्रमण का एक स्रोत माना। धर्म जिसे कि प्रायः क्षेत्र द्वारा परिभाषित किया जाता है; भाषा और स्थानीय रीति-रिवाज़ विश्वभर में सांस्कृतिक विविधता पर आक्रमण के तीसरे स्रोत हैं। क्योंकि धर्म जीवंतता को नष्ट करता है और बड़े परिमाण में सांस्कृतिक विविधता को प्रभावित करता है और स्वतंत्रता से वंचित रखता है। उन्होंने इस

श्री आशीष नंदी द्वारा संवत्सर व्याख्यान

बात पर दुःख प्रकट किया कि इन धार्मिक भावनाओं के कारण ही हम सांस्कृतिक समुदायों और अस्मिताओं से तेज़ी से हाथ धो रहे हैं। डॉ. नंदी का मानना था कि राष्ट्र-राज्य भी सांस्कृतिक विविधता पर प्रहार के प्रभावी स्रोत हैं; साथ ही संस्कृति के उन अंगों को अस्वीकृत करने की मानसिकता, जो बिकाऊ नहीं है, इक्कीसवीं सदी में सांस्कृतिक विविधता पर आक्रमण का मुख्य स्रोत है।

व्याख्यान के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने डॉ. नंदी का स्वागत किया। अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने डॉ. आशीष नंदी का पुष्पगुच्छ से अभिनंदन किया।

खुला मंच : मीडिया के साथ पुरस्कृत लेखकों की बातचीत

मीडिया से पुरस्कृत रचनाकारों से सीधी बातचीत के लिए आयोजित खुला सत्र 10 मार्च 2015 को रवींद्र भवन लॉन में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में पत्रकारों/लेखकों और पाठकों ने पुरस्कृत लेखकों से साहित्य, समाज, सत्ता और मीडिया के संबंधों को लेकर विभिन्न तरह के सवाल किए। आई.एन.एस. न्यूज एजेंसी से आई शिल्पा रैना ने हाल ही में दक्षिण भारत में दो लेखकों के साथ हुई घटनाओं को संदर्भित करते हुए सवाल पूछा कि ऐसे में लेखक अपनी बात क्या खुले तरीके से रख पाएँगे।

इसके जवाब में डोगरी में पुरस्कृत लेखक शैलेंद्र सिंह ने जो पुलिस सेवा में हैं, कहा कि सरकार में रहते हुए सरकार का विरोध करना मुश्किल काम है, लेकिन फिर भी मैं जो कहना चाहता हूँ उसे अपने पात्रों के ज़रिए से कह पाता हूँ।

असमिया लेखक अरूपा पंतगीया कलिता ने कहा कि प्रकाशक आजकल लेखक से अपनी शर्तों पर लिखवाना चाहते हैं जो कि चटपटा और लोकप्रिय हो। लेकिन हम लेखकों को ही यह तय करना होगा कि हमें किसके साथ होना है।

कहानीकार अशोक गुप्ता द्वारा पूछे गए प्रश्न कि साहित्यकार अभी केवल समस्याओं को छू भर रहे हैं, समाधान की कोई बात नहीं हो रही, इसका जवाब देते हुए ओड़िया रचनाकार श्री गोपाल कृष्ण रथ ने कहा कि पत्रकारिता और साहित्य में एक सीमा रेखा है। पत्रकारिता समस्याओं के हल के बारे में सोचती है, किंतु लेखक को लिखते समय रचना की पठनीयता और पाठकों के रुचि का भी ध्यान रखना होता है। रणजीत साहा के इस सवाल पर कि लेखकों और प्रकाशकों को पाठकों के बारे में भी कुछ सोचना चाहिए, प्रख्यात मराठी लेखक भालचंद्र नेमाडे ने कहा कि यह सचमुच चिंतनीय है कि आज लेखकों ने अपने-अपने खेमे बना लिए हैं जिसके चलते सहृदय पाठक को भी संदिग्ध नज़रों से देखा जाने लगा है।

आमने-सामने

साहित्य अकादेमी द्वारा मनाए जा रहे साहित्योत्सव 2015 के तीसरे दिन 11 मार्च 2015 को सम्मानित लेखकों से प्रख्यात लेखकों/विद्वानों से बातचीत के कार्यक्रम आमने-सामने के अंतर्गत आज पाँच लेखकों ने अपनी रचना-प्रक्रिया के बारे में विस्तार से बताया।

असमिया लेखिका अरूपा पतंगीया कलिता से प्रदीप आचार्य ने बातचीत की। अरूपा जी ने कहा कि वह असम के प्राचीनतम इतिहास से लेकर स्वतंत्रता संग्राम तक के आंदोलन के इतिहास से बेहद प्रभावित हैं और अपनी रचनाओं में इसका प्रयोग भी करती हैं। *ज़ुबान*

प्रो. रमेशचंद्र शाह से बातचीत करते हुए श्री प्रयाग शुक्ल

श्री जयंत नारळीकर से बातचीत करते हुए श्री विलास खोले

नाम के अपने उपन्यास की चर्चा करते हुए कहा कि इसके लिए मैंने स्वतंत्रता संग्राम के समय की पृष्ठभूमि का चयन किया। उसमें उस दौरान महिलाओं और बच्चों द्वारा उठाई गई कठिनाइयों का ज़िक्र है। स्वतंत्रता आंदोलन के चलते ज़्यादातर पुरुष तो घरों से बाहर रहते थे, जिसके चलते पुलिस/प्रशासन द्वारा पैदा की गई मुश्किलों का सामना घर में रह रही महिलाओं को करना पड़ता था।

हिंदी के लिए पुरस्कृत रमेशचंद्र शाह ने प्रयाग शुक्ल को अपनी रचना-प्रक्रिया के बारे में बताते हुए कहा कि अपने अंतर्मन को अभिव्यक्त करने के लिए ही मैंने अलग-अलग विधाएँ चुनी हैं। प्रकृति और एकांत ने जहाँ मुझे कविता लिखने को प्रेरित किया तो बाज़ार के बीच रहते हुए मैंने मानव के विभिन्न चरित्रों को समझा और उसको अपनी कहानियों-उपन्यासों द्वारा व्यक्त किया। आत्मकथा लिखने संबंधी प्रश्न के जवाब में उन्होंने कहा कि लेखक अपने लेखन में अपना आत्म ही उड़ेलता है और अगर उसे पाठक पसंद कर रहे हैं तो संभवतया उसे आत्मकथा लिखने की कोई ज़रूरत नहीं है। *विनायक* उपन्यास के बारे में शाह जी ने बताया कि इस उपन्यास को लिखने का कारण उनके पाठकों की वे दो चिट्ठियाँ हैं, जिनमें उन्होंने जानना चाहा था कि उनके पहले उपन्यास *गोबर गणेश* का नायक, जिसकी उम्र उस समय 27 वर्ष थी, वो वर्तमान में किस तरह जीवन व्यतीत कर रहा है।

उन्होंने कहा कि आज के लेखक का दुर्भाग्य है कि उसके पास अब पाठक नहीं हैं। किसी भी साहित्य की परिभाषा बिना पाठकों के तय नहीं हो सकती। हम लेखकों को इस पर विचार करना चाहिए। इस अवसर पर उन्होंने अपने लेखक मित्रों, विशेषकर अशोक सेक्सरिया को याद करते हुए कहा कि ऐसे सजग पाठक और मित्र ही अच्छे साहित्य के आधार होते हैं।

जयंत विष्णु नारळीकर ने विकास खोले से बातचीत के दौरान कहा कि नेहरू ने जिस वैज्ञानिक समाज का सपना देखा था वो अभी तक अधूरा है और कई मामलों में हम और ज़्यादा अंधविश्वासी हुए हैं। भगवान और धर्म के अस्तित्व को लेकर किए गए सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि विज्ञान इसका जवाब हाँ या ना में नहीं दे सकता। विज्ञान किसी भी विचार को तभी मानता है, जब वह उसके परीक्षण पर खरा उतरता है। यह प्रक्रिया बहुत लंबी है। वैसे भी विज्ञान में हम जैसे-जैसे समझते जाते हैं, हमें लगने लगता है कि हमारी समझ और कम होती जा रही है।

पंजाबी लेखक जसविंदर का परिचय देते हुए उनसे बात कर रही वनीता जी ने कहा कि ग़ज़ल विधा के लिए अकादेमी पुरस्कार पाने वाले वे दूसरे ग़ज़लकार हैं। इनकी ग़ज़लों में पारंपरिक ग़ज़ल से अलग हटकर सामाजिक सरोकारों, विशेषकर पंजाबी परिवेश की शब्दावली और मुहावरे की सटीक अभिव्यक्ति मिलती है। जसविंदर ने कहा कि पुरस्कार पाने के बाद मुझे लगा कि मैं ठीक रास्ते पर चल रहा हूँ और यह मेरे लिए एक हौसला अफ़जाई की बात है।

तेलुगु लेखक राचपालेम चंद्रशेखर रेड्डी ने जे.एल. रेड्डी के साथ अपनी बातचीत में कहा कि अच्छे साहित्य के लिए अच्छी आलोचना का भी होना बहुत ज़रूरी है। हालाँकि यह मुश्किल काम है, लेकिन ये साहित्य की उत्कृष्टता के लिए अनिवार्य भी है। उन्होंने कहा कि आज के समाज में बुक कल्चर घट रहा है और लुक कल्चर बढ़ रहा है। हमें इसमें संतुलन लाने की ज़रूरत है।

कार्यक्रम का संचालन अकादेमी की उपसचिव रेणु मोहन भान ने किया।

युवा साहिती : युवा लेखक सम्मिलन

साहित्योत्सव के अंतर्गत 11 मार्च 2015 को आयोजित युवा लेखक सम्मिलन 'युवा साहिती' का उद्घाटन करते हुए हिंदी के लब्धप्रतिष्ठ कथाकार गिरिराज किशोर ने कहा कि इस आयोजन के माध्यम से आज मुझे अपने भविष्य से बात करने का अवसर मिल रहा है। साहित्य हमारा संरक्षक है। गिरिराज जी ने आगे कहा कि अकादमियों के सामने अपनी स्वायत्तता बनाए रखने की चुनौती है और इसका दारोमदार केवल उन पर नहीं, बल्कि साहित्यकारों पर भी है।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि लेखन युवा और बूढ़ा नहीं होता, लेकिन लेखक युवा और बूढ़ा होता है, उस पर काल का असर होता है। उन्होंने यह भी कहा कि युवा लेखकों को किसी का अनुसरण नहीं करना चाहिए और किसी विचारधारा के दलदल में नहीं फँसना चाहिए। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रख्यात हिंदी कथा लेखिका चित्रा मुद्गल ने कहा कि हमें समझना होगा कि साहित्य की भूमिका क्या है? उन्होंने युवा रचनाकारों का आह्वान किया कि वे अपनी मातृभाषा को बचाएँ एवं अभिव्यक्ति का माध्यम अपनी मातृभाषा को बनाएँ।

उद्घाटन सत्र का समाहार करते हुए अकादेमी के उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने युवा लेखकों के प्रति आभार व्यक्त किया और कहा कि हम अपनी परंपराओं को युवा पीढ़ी को हस्तांतरित कर रहे हैं। आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए

युवा साहिती कार्यक्रम में भाग लेती एक प्रतिभागी : युवा लेखक सम्मिलन

युवा लेखक सम्मिलन के प्रतिभागी

अकादेमी द्वारा युवा लेखन को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे प्रयत्नों के बारे में बताया।

युवा साहिती का प्रथम सत्र कविता-पाठ को समर्पित था, जिसकी अध्यक्षता लब्धप्रतिष्ठ हिंदी आलोचक डॉ. मैनेजर पांडेय ने की। रणजीत गोगाई (असमिया), अनिल चावड़ा (गुजराती), वी.आर. कारपेंटर (कन्नड), प्रवीण काश्यप (मैथिली), वाङ्थोई खुमन (मणिपुरी), टीका भाइ (नेपाली) और नरेंद्र कुमार भोई (ओड़िया) ने अपनी-अपनी मातृभाषा में एक कविता सुनाई तथा कुछ कविताओं के हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किए। अपनी अध्यक्षीय टिप्पणी में मैनेजर पांडेय ने कहा कि कविता मनुष्य की मातृभाषा होती है। उन्होंने यह भी कहा कि हर भाषा की एक लय होती है और भाषा का संगीत मन को छूता है, इसीलिए कविता समझी जाने से पहले संप्रेषित होती है। कविता अपनी परंपरा से जुड़ती है और मातृभाषा अपने इतिहास तथा संस्कृति से।

द्वितीय सत्र कहानी पाठ को समर्पित था, जिसमें विशाल खांडेपारकर (कोंकणी) एवं श्रीमती इंदु मेनन (मलयाळम्) ने अपनी कहानियों का पाठ किया। विशाल खांडेपारकर की कहानी का शीर्षक था 'सोमा घड़ी', जो समाज में फैले अंधविश्वास को बयान करती थी। इंदु मेनन ने अपनी मलयाळम् कहानी को अंग्रेज़ी अनुवाद में

युवा साहिती के प्रतिभागी : युवा लेखक सम्मिलन

प्रस्तुत किया। इसमें मानवीय संवेदना की गहन अभिव्यक्ति थी। सत्र की अध्यक्षता हिंदी के जाने-माने कथाकार अब्दुल बिस्मिल्लाह ने की। उन्होंने कहानियों पर टिप्पणी करते हुए रचनाकारों को बधाई दी और अपनी 'ख़ून' शीर्षक कहानी का पाठ भी किया।

तीसरा सत्र कविता-पाठ का था, जिसकी अध्यक्षता हिंदी के वरिष्ठ कवि विष्णु नागर ने की। इस काव्य गोष्ठी में हिंदी के प्रांजल धर, कश्मीरी के सागर नज़ीर, मराठी के रवि कोरडे, पंजाबी के गगनदीप शर्मा, राजस्थानी के कुमार अजय, संताली के आनूपा मारांडी, संस्कृत के राजकुमार मिश्र, सिंधी के अनिता दयाल तेजवानी, तमिळ की उमा देवी, तेलुगु के मंत्री कृष्ण मोहन एवं उर्दू के वासिफ़ यार ने अपनी कविताएँ एवं ग़ज़लें प्रस्तुत कीं। अध्यक्षीय टिप्पणी में विष्णु नागर ने कहा कि बाज़ारवाद एवं भूमंडलीकरण के दौर में रचनाकार अपनी रचनाओं द्वारा जो योगदान कर रहे हैं, वह सराहनीय हैं। उन्होंने यह भी कहा कि आज की युवा पीढ़ी निराशा एवं आशा को किस-किस तरह से अपनी कविता में बुन रही है -- यह देखने योग्य है। अंत में श्री नागर ने अपनी कविता 'एक ग़रीब ही कह सकता है' पढ़ी। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के उपसचिव ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने किया।

गीता चंद्रन द्वारा नृत्य प्रस्तुति

'भारत की अलिखित भाषाएँ' पर परिसंवाद

साहित्य अकादेमी द्वारा मनाए जा रहे साहित्योत्सव के चौथे दिन 12 मार्च 2015 को 'भारत की अलिखित भाषाएँ' विषयक परिसंवाद के उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि भारत जैसे बड़े देश में जहाँ आज भी बहुत-सी भाषाएँ अपने पूरे विकसित विमर्शों में होते हुए भी; कहीं लिपि के आधार पर तो कहीं राजनैतिक आधार पर, प्रकाश में नहीं आ सकी हैं, अकादेमी भारत की अलिखित भाषाओं पर परिसंवाद की शुरुआत करके एक नई नींव डाल रही है। प्रो. तिवारी ने कहा कि वैसे तो पहले सभी भाषाएँ अलिखित ही होती हैं, बाद में लिपि विकसित होती है। लिपि का होना महत्त्वपूर्ण तो है, किंतु केवल लिपि के होने से कोई भाषा महत्त्वपूर्ण नहीं हो जाती।

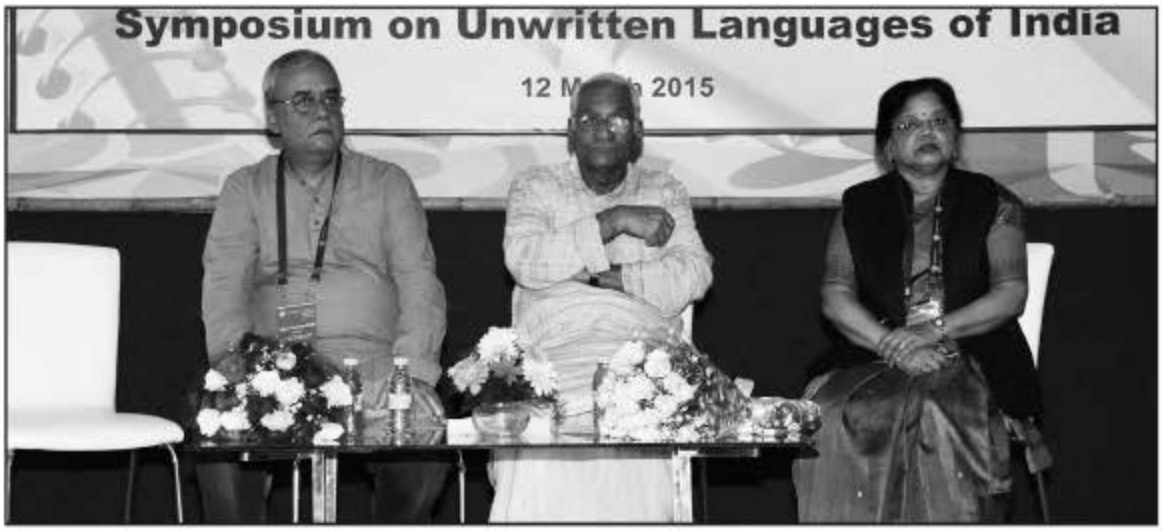

प्रो. उदय नारायण सिंह, प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी एवं प्रो. अन्विता अब्बी

सुश्री अन्विता अब्बी ने कहा कि भारत में आज कुल 1576 बोली जाने वाली भाषाएँ हैं, जो बहुत से परिवर्तनों के बावजूद अपनी गरिमा और उपस्थिति बनाए हुए हैं। यहाँ अलिखित भाषाएँ लिखित भाषाओं से कहीं ज़्यादा हैं और यह आश्चर्यजनक है कि वे अपने अर्थों को वैज्ञानिक तथा तकनीकी के माध्यम से संप्रेषित करने में पूरी तरह सक्षम भी हैं। प्रो. उदयनारायण सिंह ने लिपि और भाषा के मनोवैज्ञानिक पक्ष पर अपने को केंद्रित करते हुए कहा कि छोटे बच्चे बोलने से पहले ही चित्र बनाने की ओर आकर्षित होते हैं। दरअसल वह अपने स्तर पर लिपि और भाषा का विकास कर रहे होते हैं।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र का शुभारंभ प्रो. आयशा किदवई ने किया। उन्होंने अलिखित भाषाओं की तमाम बारीकियों को श्रोताओं के समक्ष रखते हुए तथा उसका विश्लेषण करते हुए कहा कि प्रारंभिक स्तर पर बोली जा रही ज़्यादातर जनजातीय भाषाएँ अपने एक ख़ास टोन के कारण संप्रेषण कर पाती हैं, किंतु वे एक ऐसे गद्य के रूप में बोली जाती हैं, जिनमें कोई खड़ी पाई अथवा अल्पविराम जैसा बोध नहीं होता। उमारानी पप्पूस्वामी ने उत्तर-पूर्व में बोली जानेवाली भाषाओं के बारे में कहा कि यहाँ ऐसी कई भाषाएँ हैं, जिनका ब्यौरा तक भारत सरकार के पास नहीं है। बहुत-सी अति-प्राचीन भाषाएँ, जिनकी अपनी वैज्ञानिक लिपि थी, किसी भी प्रकार का प्रश्रय न मिलने के कारण धीरे-धीरे इंटरनेट के माध्यम से

दर्शक दीर्घा का एक दृश्य

श्रीमती आयशा किदवई

प्रो. अन्विता अब्बी

रोमन लिपि में लिखी जाने लगी हैं। उदाहरण के लिए 'गारो', 'दिमासा' जैसी भाषाएँ जो पहले बाङ्ला लिपि में लिखी जाती थीं, अब रोमन में लिखी जाने लगी हैं। कविता रस्तोगी ने कुमायूँ में बोली जाने वाली राजी भाषा पर अपना शोध आलेख पढ़ा। सत्र में अवधेश कुमार मिश्र, बी.एन. पटनायक, वी.आर.के. रेड्डी, महेन्द्र मिश्र, इम्तियाज़ हसनैन और फ़ारूक़ मीर ने आलेख पढ़े।

परिसंवाद के आरंभ में साहित्य अकोदमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी का स्वागत करते हुए कहा आज का दिन हमारे लिए इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि आज साहित्य अकादेमी का स्थापना दिवस है। उन्होंने अलिखित भाषाओं में उपलब्ध साहित्य के संग्रह और लिपीकरण की समस्याओं और चुनौतियों को संदर्भित किया।

स्थापना दिवस व्याख्यान : एस.एल. भैरप्पा

साहित्य अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में 12 मार्च 2015 को लब्धप्रतिष्ठ कन्नड लेखक एस.एल. भैरप्पा ने स्थापना दिवस व्याख्यान देते हुए कहा कि हमारे स्वतंत्रता संग्राम के दौरान लगभग सभी लेखक भारत की खोज को लेकर चिंतित थे और उन्होंने विवेकानंद, श्रीअरविंद, तिलक और गाँधी के माध्यम से मातृभूमि को समझने का प्रयत्न किया; लेकिन स्वातंत्र्योत्तर दौर के लेखक एक बिल्कुल अलग बौद्धिक परिवेश में साँसें ले रहे हैं। यद्यपि नेहरू ने दावा किया था कि वे गाँधी जी के राजनीतिक उत्तराधिकारी हैं, लेकिन वे गाँधीवादी दर्शन, गाँधीवादी अर्थशास्त्र अथवा ग्राम समाज में विश्वास नहीं रखते थे। उनका विश्वास केंद्रीकृत योजनाओं, बड़े उद्योगों और राज्य नियंत्रित अर्थव्यवस्था में था। गाँधी जी का ईश्वर और धर्म में विश्वास उनके लिए किसी काम का नहीं था।

भैरप्पा ने अपने व्याख्यान में नेहरू युग के बाद श्रीमती इंदिरा गाँधी के दौर की आर्थिक नीतियों की आलोचना करते हुए कहा कि चाहे जो भी सरकार रही हो उसने ग़ैर-सरकारी उद्यमों, दाग़दार उद्योगपतियों और व्यवसायियों को प्रोत्साहित किया है। उन्होंने लेखकों से प्रश्न किया कि इस नई स्थिति में उन्हें क्या करना चाहिए?

उन्होंने कहा कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद जापानी शिक्षाविद् इस बात को लेकर चिंतित रहे कि पश्चिमी जीवन पद्धति, ख़ासकर अमरीकी जीवनशैली के प्रभाव से किस तरह पारंपरिक मूल्यों को बचाया जाए। आज हम भारत में इसी तरह की समस्या का सामना कर रहे

हैं। भारतीय जीवन पद्धति को जिस तरह आर्थिक उदारीकरण के माध्यम से पश्चिमी जीवन शैली दरकिनार कर रही है, वह हमारे राष्ट्र के लिए और हम रचनाकारों के लिए भी बड़ी चुनौती है।

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं सदी के आरंभ में अंग्रेज़ी शिक्षा के माध्यम से लगभग सभी भारतीय भाषाएँ पश्चिमी साहित्य के संपर्क में आईं। उपन्यास, कहानी और कविता की विधाओं में एक ताज़गी दिखी। पश्चिमी साहित्य से प्रभावित भारतीय लेखकों ने इन नई विधाओं में अपनी भारतीय जड़ों की तलाश शुरू की। यह तलाश हमारे स्वतंत्रता संग्राम का एक अंग बनी, लेकिन स्वतंत्रता के बाद हमारे बहुत से लेखकों ने पश्चिमी विषयवस्तु और शैलियों को अपनाना शुरू किया।

डॉ. भैरप्पा ने बताया कि स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले अधिकांश राज्यों में हाई स्कूल तक संस्कृत पढ़ाई जाती थी। स्वतंत्रता मिलने के बाद केंद्रीय सरकार के द्वारा बहुत से परिवर्तन और सुधार किए गए, जिसके कारण संस्कृत का उतना महत्त्व नहीं रहा। स्थिति यह है या तो विद्यालयों के विद्यार्थी विषय के रूप में संस्कृत नहीं लेते या अधिकांश विद्यालयों में संस्कृत का अध्यापक नहीं होता। जिस समय तक विद्यार्थी युवा होता है और सर्जनात्मक साहित्य में उसकी रुचि विकसित होती है, तब तक अमरकोश और कारकों के साथ संस्कृत सीखना प्रारंभ करना संभव नहीं रह जाता। साहित्यिक लेखकों को प्रारंभिक स्तर पर संस्कृत ज्ञान की आवश्यकता इसलिए होती है कि वे अपनी अभिव्यक्ति को गहराई, तीक्ष्णता और संक्षिप्ति प्रदान कर सकें।

उनका कहना था कि भारतीय भाषाओं पर दूसरा बड़ा खतरा और विनाशकारी प्रभाव अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों का प्रसार रहा है। कन्नड की स्थिति यह है कि कर्नाटक के प्रत्येक शहर और क़स्बे के माता-पिता अपने बच्चों को अंग्रेज़ी माध्यम स्कूलों में भेजना चाहते हैं, क्योंकि उनका सपना है इन स्कूलों में पढ़कर उनके बच्चे डॉक्टर या इंजीनियर बनेंगे। शिक्षाविद् इस बात को

डॉ. एस. एल. भैरप्पा

कहते रहे हैं कि किसी बच्चे के मानसिक और संवेदनात्मक विकास के लिए मातृभाषा अथवा उस परिवेश की भाषा सबसे ज़्यादा समीचीन होती है और उस पर किसी विदेशी या अनजानी भाषा को थोपना उसकी विचार शक्ति और अनुभव शक्ति की हत्या करना है। स्थिति यह है कि अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यार्थी अपनी मातृभाषा न पढ़ सकते हैं, न लिख सकते हैं। अपनी मातृभाषा की कविताओं में उनकी कोई रुचि नहीं होती और वे हमारे देश की मातृभाषा में उपलब्ध समृद्ध साहित्य से अनजान बने रहते हैं। इसके अतिरिक्त वे लोक साहित्य के ख़ज़ाने से अपरिचित रहते हैं। यदि किसी बच्चे में सर्जनात्मक लेखन की प्रतिभा है भी तो वह अपनी मातृभाषा में अपने को अभिव्यक्त नहीं कर सकता और परिणाम यह होता है कि वह अंग्रेज़ी में लेखन शुरू करता है। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि ऐसी स्थिति दूसरी भाषाओं में भी है और इसका सामना करने के लिए एक सम्मिलित प्रयास की ज़रूरत है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र तथा राष्ट्र

साहित्योत्सव 2015 के चौथे दिन 13 मार्च 2015 'भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र तथा राष्ट्र' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखक किरण नागरकर ने किया और बीज भाषण नीरा चंडोक ने दिया। सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने की। कार्यक्रम के प्रारंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवास राव ने सभी विद्वानों का स्वागत किया।

अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि यह संगोष्ठी विशेष रूप से भारतीय भाषाओं में क्षेत्रीय उपन्यासों के उभार से जुड़ी हुई है। पचास के दशक में सभी भारतीय भाषाओं के लेखन में तेज़ी आई और हिन्दी में इसे 'आंचलिक' की संज्ञा दी गई। ये कृतियाँ हालाँकि एक क्षेत्र विशेष तक केंद्रित थी, लेकिन इसने राष्ट्र के मानस को प्रभावित किया। उन्होंने प्रेमचंद के 'गोदान' का उदाहरण देते हुए कहा कि यद्यपि यह बनारस की पृष्ठभूमि पर है, लेकिन यह देशभर के किसानों की स्थिति का आईना है। उन्होंने अंतरालों को पाटने में लेखकीय दृष्टि की आवश्यकता पर बल दिया।

अपने उद्घाटन व्याख्यान में किरण नागरकर ने देश के भीतर भाषाओं के संघर्ष पर अपने को केंद्रित किया। उन्होंने कहा कि वे स्वयं दो भाषाओं में लिखते रहे हैं और उनसे प्रायः पूछा जाता है कि वे मराठी से अंग्रेज़ी की तरफ़ क्यों गए? और मुझे लगता है कि इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न में यह प्रश्न भी छुपा है कि उन्होंने मराठी में लिखना क्यों बंद किया। उन्होंने बताया कि उनके जीवन में वह एक प्रस्थान बिंदु था, जब वे सेंट जेवियर्स कॉलेज, मुंबई से फर्ग्यूसन कॉलेज, पुणे गए। जब वे स्कूल में थे, मराठी और दूसरी क्षेत्रीय भाषाओं को कमतर माना जाता था और विद्यार्थी उसे अगली कक्षा में जाने का साधन मात्र समझते थे, लेकिन दिलीप चित्रे से मिलने और 'अभिरुचि' पत्रिका के संपर्क में आने पर वे अपनी पहली कहानी और पहला उपन्यास लिखने को प्रेरित हुए। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि भाषाओं को संरक्षित करने की ज़रूरत है, क्योंकि किसी भाषा का लुप्त होना एक समूची जीवन पद्धति, अनुभूति और विचार का लुप्त होना है।

श्री किरण नागरकर एवं प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

अपने बीज भाषण में नीरा चंडोक ने दक्षिण एशियाई संदर्भ में राष्ट्र-राज्य होने के विभिन्न विरोधाभासों की चर्चा की। उन्होंने राष्ट्रों के उदय को उपनिवेशवाद, संस्थागत अन्याय और अत्यधिक विभेद अथवा एक समूह के ख़िलाफ़ एक निश्चित्त समूह की अस्मिता को परिभाषित करने की आवश्यकता जैसे गंभीर उकसावे की प्रतिक्रिया माना। उन्होंने कहा कि अपने रक्तरंजित इतिहास की परीक्षाओं के माध्यम से राष्ट्र-राज्य के जन्म के साथ दक्षिण एशिया को अभी भी इसके सबक़ लेने हैं। उन्होंने

राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में बोलते हुए अकादेमी के सचिव

विभिन्न क्षेत्रों के मध्य समानताएँ देखने और साथ आने की आवश्यकता पर बल दिया।

संगोष्ठी का पहला सत्र 'उत्तर भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र तथा राष्ट्र' विषय पर केंद्रित था। सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात आलोचक गोपीचंद नारंग ने की। सत्र में तीन सुप्रसिद्ध विद्वानों—फ़ारूक़ फ़याज़, नंद भारद्वाज, और राधा वल्लभ त्रिपाठी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए, जिनके विषय थे—'कश्मीरी कथा साहित्य में राष्ट्र और क्षेत्र', 'कथा-सृजन में क्षेत्र और राष्ट्र का प्रतिबिम्ब' तथा 'आधुनिक संस्कृत कथा साहित्य में राष्ट्र क्षेत्र और अस्मिताएँ'।

द्वितीय सत्र 'भारतीय अंग्रेज़ी कथा साहित्य में क्षेत्र तथा राष्ट्र' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता आलोक भल्ला ने की और तीन प्रतिभागियों—कविता शर्मा, इप्शिता चंदा और सचिन केतकर ने क्रमशः 'महाभारत की राजनीति', 'हम आपके हैं कौन?: भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य में न क्षेत्र न राष्ट्र' तथा 'अंधकार को प्रकाश में अनूदित करते हुए : 'व्हाइट टाइगर का एक सांस्कृतिक संकेतात्मक पाठ' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी के दूसरे दिन संगोष्ठी के तृतीय सत्र की अध्यक्षता के. सच्चिदानंदन ने की, जो 'दक्षिण भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र एवं राष्ट्र' विषय पर केंद्रित थी। प्रो. सच्चिदानंदन ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में भारतीय साहित्य में क्षेत्र एवं राष्ट्र की अवधारणा के उद्भव पर अपने विचार रखे तथा कहा कि उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक से लेकर बीसवीं सदी के मध्य तक उपन्यास को राष्ट्र के वर्णन के एक उपकरण के रूप में देखा जाता रहा। उसके बाद के कथा साहित्य में प्रादेशिकता का प्रसार हुआ, जिसके मुख्यतः दो कारण हैं, पहला; लोगों ने यह मानना शुरू कर दिया कि राष्ट्र की बजाय क्षेत्र ज़्यादा यथार्थ और निकट है। दूसरा; स्थानीयता के माध्यम से जनता के मुद्दों को प्रश्रय दिया जा सकता है। उन्होंने कहा कि दलित, आदिवासी, स्त्री, द्विलिंगी लोग जैसे विविध समुदाय और वर्ग, जिनका कोई राष्ट्र नहीं है; तथा भूमंडलीकरण भी इसके प्रमुख पक्ष हैं, जिन पर विचार किया जाना चाहिए।

इस सत्र में मलयाळम् लेखक एम. मुकुंदन ने 'मलयाळम् कथा साहित्य में क्षेत्र एवं राष्ट्र' विषयक अपने आलेख में कहा कि राष्ट्र निर्माण एक अनवरत प्रक्रिया है; तथा क्षेत्रीय लेखन, विशेषकर क्षेत्रीय कथा

संगोष्ठी में अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए श्री दामोदर मावज़ो

साहित्य को राष्ट्र की सांस्कृतिक एकता में योगदान के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। उन्होंने मलयाळम् कथाकृतियों को संदर्भित करते हुए क्षेत्र की अवधारणा के विभिन्न पक्षों को उद्घाटित किया। इस सत्र में अंपाशैया नवीन और ए. आर. वेंकटचलपति ने क्रमशः 'तेलुगु कथा साहित्य में क्षेत्र एवं राष्ट्र' तथा 'काला सुंदर है : तमिलनाडु के ब्लैक कॉटन स्वायल (कारिसाल) क्षेत्र का साहित्य, विशेष संदर्भ : चो. धर्मन का कथा साहित्य' विषयक आलेख प्रस्तुत किए।

'उत्तर भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र एवं राष्ट्र' विषयक चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता प्रख्यात मराठी लेखक एवं विद्वान भालचंद्र नेमाड़े ने की। इस सत्र में कांजी पटेल और राना नायर ने क्रमशः 'गुजराती कथा साहित्य में जनजाति एवं राष्ट्र' तथा 'पंजाबी कथा साहित्य में क्षेत्र एवं राष्ट्र' विषयक आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. नेमाड़े ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कहा कि क्षेत्र का सीमांकन विवाद का विषय है और इसमें परिवर्तन होता रहता है। उन्होंने कहा कि किसी न किसी तरीक़े से सभी लेखक केवल क्षेत्रीय होते हैं।

पंचम सत्र 'पश्चिम भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र एवं राष्ट्र' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता गुजराती साहित्यकार सितांशु यशश्चंद्र ने की। इस सत्र में दामोदर मावज़ो, मोहन गेहाणी और प्राची खांडेपारकर ने क्रमशः 'पश्चिम भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र एवं राष्ट्र', 'भारतीय कथा साहित्य, विशेषकर सिंधी कथा साहित्य में क्षेत्र एवं राष्ट्र' तथा 'आधुनिक मराठी कथा साहित्य में क्षेत्र एवं राष्ट्र' विषयक आलेख प्रस्तुत किए।

'उत्तर-पूर्व भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र एवं राष्ट्र' विषयक षष्ठ सत्र निर्मलकांति भट्टाचार्जी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें अनिल कुमार बोरो तथा थ. रत्नकुमार सिंह ने क्रमशः बोडो और मणिपुरी कथा साहित्य में क्षेत्र एवं राष्ट्र के संदर्भों पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. बोरो ने कहा कि बोडो कथा साहित्य अभी पचास साल का भी नहीं हुआ; और यह बहुत ही ज्यादा उप-क्षेत्रीय प्रकृति का है। इस सत्र में एम. असदुद्दीन ने 'पूर्वोत्तर भारत का साहित्य : परिभाषा तथा संचयन की समस्याएँ' विषयक आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर में भाषाओं के समुच्चय मौजूद हैं, जिनमें प्रचुर साहित्य रचना हो रही है; लेकिन सबसे बड़ी समस्या यही है कि सबकुछ अनदेखा रह जा रहा है तथा कुछ विशेष भाषाओं का साहित्य ही पूर्वोत्तर के साहित्य के रूप में रेखांकित और संचयित हो रहा है। अपने अध्यक्षीय भाषण में निर्मलकांति भट्टाचार्जी ने कहा कि यदि क्षेत्र का विचार राष्ट्र से अधिक यथार्थपूर्ण है तो हमें इनकी प्रवृत्तियों के अंतर्संबंधों की अधिकाधिक पड़ताल करने की ज़रूरत है; क्या यह द्वंद्वात्मक है अथवा पूरक; आदि।

बाएँ से दाएँ : सर्वश्री कांजी पटेल, भालचंद्र नेमाड़े तथा राना नायर

14 मार्च 2015 । 9 मार्च 2015 से शुरू हुए साहित्योत्सव का आज अंतिम दिन था और 'भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र तथा राष्ट्र' विषय पर आयोजित

संगोष्ठी में अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए श्री एम. मुकुंदन

संगोष्ठी का तीसरा दिन। आज सुबह आयोजित सातवें सत्र का विषय था 'भारतीय कथा साहित्य में महिलाएँ तथा राष्ट्र'। इसकी अध्यक्षता डॉ. रुक्मिणी भाया नायर ने की, जिसमें तीन विदुषियों—सुश्री वोल्गा, डॉ. लीना चंदोरकर और डॉ. अनामिका ने क्रमशः 'एक स्वतंत्र राष्ट्र में दलितों का जीवित यथार्थ : स्वराज्यम उपन्यास पर कुछ विचार', 'गौरी देशपांडे के कथा साहित्य में स्त्री प्रश्न' और 'उपन्यास के चित्रपट पर स्त्री को बुनते हुए : हाल के तीन नवीनतम उपन्यासों में राष्ट्र की स्त्रीवादी अवधारणा' पर अपने आलेख पढ़े। डॉ. रुक्मिणी भाया नायर ने अपनी टिप्पणी में स्त्री और राष्ट्र विषय पर संगोष्ठी में एक सत्र रखने पर अकादेमी को बधाई देते हुए कहा कि इसके प्रयासों से देशभर में महिला रचनाकार पहले से अधिक दिखाई पड़ रही हैं। उन्होंने कहा कि साहित्य में क्षेत्र, राष्ट्र और स्त्री का चित्रण नया नहीं है और इसे हम रवीन्द्रनाथ ठाकुर के आरंभिक लेखन में देख सकते हैं। डॉ. नायर ने मस्तिष्क और सेक्सुएलिटी, विमर्श में 'दूसरेपन' के प्रश्न और साहित्य में स्त्रीवादी लेखन के स्थान के बारे में अपने विचार व्यक्त किए।

वोल्गा ने अपनी बात स्वराज्यम उपन्यास को केंद्र में रखकर की और स्वतंत्रता प्राप्ति के आरंभिक वर्षों में राष्ट्र निर्माण में राज्य की सामंती संस्कृति और राजसत्ता के मध्य गठबंधन के बारे में चर्चा की। उनका मानना था कि यह गठबंधन पूँजीवादी पितृसत्ताक और सांप्रदायिक शक्तियों द्वारा और शक्तिशाली हुआ है ताकि दलितों, स्त्रियों, अल्पसंख्यकों और देसी तथा भाषाई समुदायों को दबाया जा सके। डॉ. लीना चंदोरकर ने गौरी देशपांडे के स्त्रीवादी उपन्यासों के बारे में बात करते हुए मराठी कथा जगत के आरंभिक स्त्रीवादी लेखिकाओं के विभ्रम की चर्चा की और कहा कि वह गौरी देशपांडे थीं जिन्होंने स्त्री-पुरुष संबंधों पर खुली चर्चा के लिए द्वार खोले और दूसरे लेखकों को प्रेरित किया कि वे मराठी कथा साहित्य में विभिन्न स्त्रीवादी मुद्दे उठाएँ। डॉ. अनामिका ने लेखन में स्त्री मुद्दे को उठाते समय लेखकों के समक्ष आनेवाली चुनौतियों और समस्याओं के बारे में बताया। उन्होंने हिंदी, उर्दू और दूसरी भाषाओं के कथा साहित्य में इस अवरोध को तोड़ पाने में स्त्रीवादी लेखकों की अक्षमता की भी चर्चा की।

आठवें सत्र का विषय था 'भारतीय कथा साहित्य में दलित तथा राष्ट्र'। इसकी अध्यक्षता पी. शिवकामी ने की। इस सत्र में सुश्री माया पंडित, डॉ. रमणिका गुप्ता और हरीश नारंग ने क्रमशः 'नीचे की ओर से राष्ट्र : अन्नाभाऊ साठे और राष्ट्र तथा क्षेत्र का निर्माण', 'भारतीय कथा साहित्य में दलित' और 'दलित साहित्य में क्षेत्र और राष्ट्र का विचार' विषयक आलेख पढ़े। सुश्री शिवकामी ने बताया कि कैसे आरंभिक कथा साहित्य में साहित्यिक लेखन और विमर्श प्रायः राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने के

बाएँ से दाएँ : सर्वश्री मोहन गेहाणी, दामोदर मावज़ो, सितांशु यशश्चंद्र एवं सुश्री प्राची खांडेपारकर

उद्देश्य से हो रहे थे। उनका कहना था कि स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ समय बाद तक साहित्य मूलतः राष्ट्रवाद को ही केंद्र में रख रहा था। इसका कारण यह था कि राज्य की संस्थाएँ और देशभर के दूसरे संस्थान इस तरह से आकल्पित किए गए थे कि वे राष्ट्रवाद को बढ़ा सकें। राष्ट्रवाद को क्षेत्रवाद के ऊपर प्राथमिकता मिलने का दूसरा कारण यह था कि विस्तारित क्षेत्रवाद का मूल विचार ही राष्ट्र की अवधारणा के परिप्रेक्ष्य में असंगत था, हालाँकि राष्ट्र की मूल अवधारणा क्षेत्र के आधार पर निर्मित हुई है। इस परिदृश्य में यही हो सकता था कि दलित–क्षेत्रीय निर्मितियों और साहित्य की अपेक्षा उपक्षेत्रीय निर्मितियों तथा साहित्य के साथ पहचाने जाएँ।

नवें सत्र का विषय था -- 'पूर्वोत्तर भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र तथा राष्ट्र'। इसकी अध्यक्षता प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी ने की और इसमें डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय, डॉ. उदयनारायण सिंह और महेंद्र पी. लामा ने क्रमशः 'भारतीय कथा साहित्य : बाङ्ला में क्षेत्र और राष्ट्र' 'दुखियार कुथी में अमियभूषण का साहित्यिक भूदृश्य' और 'भारतीय नेपाली साहित्य में क्षेत्र और राष्ट्र : तंतुओं, उपकरणों और संस्थाओं को जोड़ते हुए' शीर्षक अपने आलेख पढ़े।

दसवाँ और अंतिम सत्र 'क्षेत्र, राष्ट्र की प्रत्यालोचना तथा भारतीय कथा साहित्य' विषय पर था। इसकी अध्यक्षता प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी ने की और इसमें तीन जाने-माने विद्वानों -- डॉ. सिराज अहमद, डॉ. ए.जे. थॉमस और डॉ. अवधेश कुमार सिंह ने क्रमशः 'नगरों के माध्यम से क्षेत्र और राष्ट्र का अपवर्तन–अंग्रेज़ी में भारतीय कथा साहित्य को पुनर्परिभाषित करते हुए', 'समकालीन मलयाळम् कहानी में प्रतिबिंबित केरल में प्रवासी मजदूरों का जीवन' और 'लघु रूप देने के विरोध में : 'क्षेत्र और राष्ट्र संज्ञानात्मक श्रेणियों के रूप में तथा भारतीय उपन्यास' विषयक आलेख पढ़े।

संगोष्ठी का समाहार करते हुए डॉ. के. श्रीनिवासराव ने देशभर से इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेने के लिए आए सभी लेखकों और विद्वानों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया और कहा कि उनकी सहभागिता से ही यह संगोष्ठी इतनी सफल हुई। उन्होंने संगोष्ठी में दिए गए महत्त्वपूर्ण व्याख्यानों की चर्चा की, और आशा व्यक्त की संगोष्ठी में आमंत्रित युवा और प्रतिभाशाली विद्वानों और लेखकों ने इस अवसर का पूरा लाभ उठाया होगा और बहुत कुछ सीखा भी होगा। उन्होंने कहा कि संगोष्ठी के दौरान जो भी महत्त्वपूर्ण और रुचिकर मुद्दे उठाए गए -- उन पर अकादेमी गंभीरता से विचार करेगी और उन बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए देशभर में साहित्यिक आयोजन करेगी।

संगोष्ठी के सत्रों का संचालन अकादेमी की उपसचिव श्रीमती गीतांजलि चटर्जी एवं श्रीमती रेणु मोहन भान ने किया।

आओ कहानी बुनें

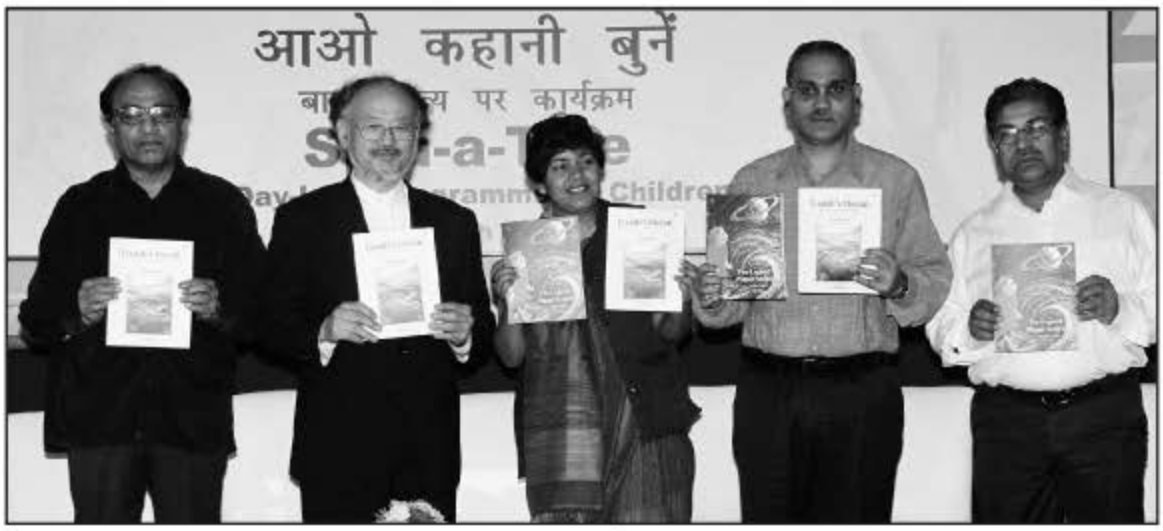

आओ कहानी बुनें कार्यक्रम के दौरान पुस्तक लोकार्पण

साहित्य अकादेमी के वार्षिक साहित्यिक आयोजन साहित्योत्सव 2015 का छठा एवं अंतिम दिन बच्चों की लेखकीय एवं रचनात्मक प्रतिभा को उभारने के लिए समर्पित रहा। 14 मार्च 2015 को 'बाल साहिती' शीर्षक के अंतर्गत आयोजित हुए इस कार्यक्रम में बच्चों की किताबों के विमोचन से लेकर बच्चों के लिए कविता लेखन प्रतियोगिता, चित्र प्रतियोगिता सहित अन्यथा सक्षम बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा प्रख्यात बाल साहित्यकारों द्वारा कहानी-वाचन कार्यक्रम हुए।

कार्यक्रम का प्रारंभ प्रख्यात जापानी बाल साहित्यकार ताजिमा शिन्जी की दो अंग्रेज़ी पुस्तकों *गौड़ीज़ ओशन* तथा *लीजेंड ऑफ़ प्लैनेट सरप्राइज़* के विमोचन से हुआ। ताजिमा शिंजी शांतिनिकेतन में भी रह चुके हैं और साहित्य अकादेमी से उनकी इन पुस्तकों के दूसरी भाषाओं के भी संस्करण प्रकाशित हुए हैं। श्री ताजिमा शिंजी की पुस्तक *गौड़ीज़ ओशन* प्रशांत महासागर में प्रदूषण के कारण मर रहे जलप्राणियों के बारे में है। उन्होंने पर्यावरण के प्रति अनदेखी पर चिंता व्यक्त करते हुए इस पुस्तक के कुछ अंश भी पढ़े।

इससे पहले कार्यक्रम में सभी उपस्थित लोगों का स्वागत करते हुए अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा कि बच्चे किसी भी देश के लिए सबसे बड़े संसाधन होते हैं और उनका मानसिक व शारीरिक विकास राष्ट्र की पूँजी है। अतः उन्हें अच्छा साहित्य उपलब्ध कराने के लिए अकादेमी 24 भारतीय भाषाओं में बाल साहित्य प्रकाशित कर रही है। उन्होंने कहा हम अपनी गतिविधियाँ केवल शहरों तक ही सीमित नहीं रखना चाहते हैं, बल्कि गाँव-गाँव तक पहुँचाना चाहते हैं। उन्होंने बच्चों को अपना संदेश देते हुए कहा, 'आप अकेले नहीं हैं। आप बहादुर बनें और आगे बढ़कर अपने फ़ैसले लें।'

इस अवसर पर नई दिल्ली महानगरपालिका की शिक्षा निदेशिका श्रीमती विदुषी ने कहा कि बच्चों के लिए अच्छे साहित्य की बेहद कमी है। हमें 'पंचतंत्र' और 'एलिस इन वंडरलैंड' की कथाओं से बाहर निकल कर बच्चों को

बाल कलाकारों द्वारा नृत्य प्रस्तुति

वर्तमान समय का कुछ नया और बेहतर साहित्य देना होगा। उन्होंने बाल साहित्य के बँधे-बँधाए ढर्रे पर होने और इसमें लैंगिक चेतना न होने पर भी चिंता प्रकट की। उन्होंने बच्चों के ज़्यादा टी.वी. देखने तथा घर के बाहर निकल कर न खेलने और लोगों से न मिलने पर चिंता प्रकट करते हुए कहा कि हमें बच्चों को स्कूली किताबों के बोझ से मुक्त कर कुछ रचनात्मक करने के लिए प्रेरणा देने वाला साहित्य रचना होगा। उन्होंने विद्यालयों में बच्चों के साथ हो रहे भेदभाव पर भी चिंता प्रकट की। इस अवसर पर राकेश श्रीवास्तव ने भी अपने विचार प्रकट किए।

शाम को हुई परिचर्चा 'नवयुवाओं के लिए पुस्तक लेखन' विषय पर केंद्रित थी, जिसमें लेखन प्रकाशन से जुड़े व्यक्तियों को आमंत्रित किया गया था। परिचर्चा में श्रीमती निवेदिता सेनगुप्त, श्रीमती मानसी सुब्रह्मण्यम, श्रीमती प्रियंवदा भट्टाचार्य, मनीषा चौधुरी और मानसरंजन महापात्र ने हिस्सा लिया। परिचर्चा के सूत्रधार श्री प्रणव कुमार सिंह थे। वक्ताओं ने एकमत से यह स्वीकार किया कि 16 से 18 वर्ष के आयुवर्ग के बच्चों को नवयुवा की श्रेणी में रखा जाना चाहिए। वक्तव्यों से यह बात भी उभरकर सामने आई कि इस आयुवर्ग के बच्चों के लिए अंग्रेज़ी में तो कुछ साहित्य प्रकाशित भी हो रहा है, लेकिन भारतीय भाषाओं में अनुकूल साहित्य नहीं के बराबर है। अभी हम पश्चिम से आयातित साहित्य ही छाप रहे हैं। भारतीय नवयुवाओं के लिए उनके परिवेश को ध्यान में रखते हुए विशेष रूप से लेखन और प्रकाशन की ज़रूरत है। कार्यक्रम का संयोजन अकादेमी की उपसचिव श्रीमती गीतांजलि चटर्जी ने किया।

'बाल साहिती' का विशेष आकर्षण आँचल स्पेशल स्कूल, चाणक्यपुरी के अन्यथा सक्षम बच्चों द्वारा की गई नृत्य प्रस्तुतियाँ थीं, जिनका निर्देशन कुमारी पूर्णिमा शर्मा और राकेश श्रीवास्तव द्वारा किया गया था। इन बच्चों द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना, बरसाने की होली, 'जय हो' एवं 'देश रंगीला' गीतों तथा राधा-कृष्ण के रास पर आधारित

आओ कहानी बुनें कार्यक्रम के अंतर्गत कविता लेखन प्रतियोगिता

नृत्यों को काफी पसंद किया गया। नृत्य प्रस्तुतियों के दौरान कार्यक्रम का संचालन मधु शर्मा द्वारा किया गया।

बच्चों के लिए कविता प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें बच्चों ने 'स्वच्छ भारत' विषय पर कविताएँ लिखीं। इसमें 12 वर्ष से कम आयु के वर्ग में अनन्या गुप्ता को प्रथम पुरस्कार, अभय को द्वितीय तथा दो सांत्वना पुरस्कार क्रमशः कान्हा त्रेहन और पावनी को दिए गए। 12 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में विदुषी जैन को प्रथम, गौरव पति को द्वितीय और उमेश कुमार को तृतीय पुरस्कार दिया गया। सांत्वना पुरस्कार काशीराम और ओशीन को दिए गए। प्रतियोगिता की निर्णायक थीं—क्षमा शर्मा और दीपा अग्रवाल। पुरस्कार वितरण अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव द्वारा किया गया।

कहानी पाठ कार्यक्रम के अंतर्गत मधु पंत और देवेन्द्र मेवाड़ी ने बहुत ही रोचक ढंग से हिंदी में अपनी कहानियाँ सुनाईं, जबकि रॉबिंसन ने अभिनय के साथ अपनी अंग्रेज़ी कहानी सुनाई। इसके बाद 'बच्चों की पुस्तकों के लिए चित्रकारी' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसका संयोजन श्री देवव्रत सरकार द्वारा किया गया। इसके अंतर्गत बच्चों को विभिन्न पाठ दिए गए और उनसे उन पाठों के आधार पर चित्र बनाने को कहा गया। इसमें बड़ी संख्या में बच्चों ने भाग लिया और बहुत सुंदर चित्र बनाए।

पूर्वोत्तरी : उत्तर पूर्वी एवं उत्तर क्षेत्रीय लेखक सम्मिलन

साहित्य अकादेमी द्वारा मनाए जा रहे साहित्योत्सव के पाँचवें दिन 13 मार्च 2015 को 'पूर्वोत्तरी' शृंखला के अंतर्गत 'उत्तर-पूर्वी एवं उत्तर क्षेत्रीय लेखन सम्मिलन' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि उत्तर-पूर्व में बोली जाने वाली भाषाएँ केवल भारत में ही नहीं, अपितु पूरे विश्व में सबसे विविध एवं समृद्ध भाषाएँ हैं। तिवारी जी ने कहा कि लिखित भाषा और अलिखित भाषा के अतिरिक्त भी एक भाषा होती है, जिसे देह भाषा कहते हैं और वह भाषा संप्रेषण के अनेक रास्तों को खोलते हुए हम सबको बहुत कुछ संप्रेषित कर जाती है। अंत में उन्होंने अपनी एक कविता 'गुनाहों का सबूत' का पाठ भी किया।

आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम पिछले वर्ष 2014 के साहित्योत्सव से प्रारंभ किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य उत्तर-पूर्वी एवं उत्तर क्षेत्रीय लेखकों को साथ लाकर उन्हें साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं अन्य गतिविधियों के आदान-प्रदान के लिए एक मंच प्रदान करना है, जिससे भारत की समृद्ध साहित्यिक परंपरा को एक नई दिशा मिल सके।

कार्यक्रम का उद्घाटन प्रख्यात असमिया लेखिका करबी डेका हजारिका ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने साहित्य के विभिन्न आयामों की चर्चा करते हुए कहा कि एक अकेली कविता भी अपने आप में साहित्य की लघु पुस्तिका होती है। भवानी अधिकारी ने कार्यक्रम की शुरुआत अपनी दो मणिपुरी कविताओं 'मूल्य' तथा 'कारीगर' एवं एक नेपाली कविता 'गाँव का उदास आँगन' से की। उन्होंने इनको मूल भाषा में एवं इनके हिंदी अनुवाद भी प्रस्तुत किए।

के. जयमति देवी (मणिपुरी), उदय कुमार शर्मा (असमिया), नवीन मल्ल बोरो (बोडो), मीठेश निर्मोही (राजस्थानी), उद्भ्रांत (हिंदी), पंकज पराशर (मैथिली), जगविंदर जोधा (पंजाबी), सरोज कौशल (संस्कृत) और मजीद मजाज़ी (कश्मीरी) ने अपनी कविताएँ मूल भाषा तथा हिंदी / अंग्रेज़ी अनुवाद में प्रस्तुत की।

दूसरा सत्र कहानी पाठ को समर्पित था, जिसकी अध्यक्षता अनिल कुमार बोरो ने की। असमिया के प्रख्यात

उदय कुमार शर्मा, भवानी अधिकारी, नवीन मल्ल बोरो, के. डेका हज़ारिका, मीठेश निर्मोही तथा के. जयमति देवी

लेखक जयंत माधव बोरा ने अपनी कहानी 'रावण' का अंग्रेज़ी में पाठ किया। मणिपुरी के मायङलमबम कंदेश सिंह ने अपनी कहानी का अंग्रेज़ी अनुवाद सुनाया, जिसका शीर्षक 'हू इज़ द अननोन पर्सन' था। भगवानदास मोरवाल ने अपनी हिंदी कहानी 'बस तुम न होते पिताजी' का पाठ किया। बीना विश्वास ने अपनी अंग्रेज़ी कहानी 'माइ ओबिच्युरी' के पाठ से कार्यक्रम का समापन किया।

कार्यक्रम के तीसरे सत्र की अध्यक्षता सुरेश ऋतुपर्ण ने की, जिसमें नेपाली कवि टी.बी. चंद्र सुब्बा, असमिया कवि रणजीत कुमार बरुआ, बोडो कवि दिननाथ बसुमतारी, मणिपुरी कवयित्री एच. वेणुबाला देवी, हिंदी कवयित्री अलका सिन्हा, पंजाबी कवि दर्शन सिंह बुट्टर, संताली कवि श्याम बेसरा, कश्मीरी कवि शौकत अंसारी, डोगरी कवि दर्शन दर्शी तथा उर्दू कवि राजेश रेड्डी ने अपनी कविताओं एवं ग़ज़लों का पाठ किया। राजेश रेड्डी की ग़ज़ल के इस शेर ने श्रोताओं की तालियाँ बटोरीं--

मेरे दिल के किसी कोने में एक मासूम-सा बच्चा
बड़ों की देखकर दुनिया बड़ा होने से डरता है

कार्यक्रम में पठित कविताओं में मानव मन की गहरी अनुभूतियों से लेकर देश-दुनिया की तमाम चिंताओं और सरोकारों की गहरी अभिव्यक्तियाँ थीं। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के विशेष कार्यधिकारी देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

राजस्थानी लोक संगीत प्रस्तुति

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2013 अर्पण समारोह

22 अगस्त 2014 को प्रज्ञाज्योति सभागार, आई टी ए सेंटर फ़ॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स, गुवाहाटी में आयोजित एक भव्य समारोह में साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2013 प्रदान किए गए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि साहित्य अकादेमी तथा ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता डॉ. केदारनाथ सिंह थे। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा अनुवाद पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, प्रतिभागियों, अनुवाद पुरस्कार विजेताओं तथा अन्य साहित्य प्रेमियों का स्वागत किया। उन्होंने अकादेमी द्वारा देश-विदेश में साहित्य के प्रोत्साहन के लिए किए जानेवाले विभिन्न प्रयासों एवं कार्यक्रमों के बारे में बताया। अकादेमी की समस्त गतिविधियों में अनुवाद एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है तथा अकादेमी अनुवाद के माध्यम से विभिन्न सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परंपराओं का समाहार करते हुए अपनी ही तरह से विविधतापूर्ण की एकता के लिए कार्य करती है। डॉ. राव ने यह भी बताया कि अनुवाद न केवल वर्तमान समय में विभिन्न संस्कृतियों की परंपराओं को एक साथ लाता है बल्कि वह भूत एवं भविष्यकाल के मध्य एक सेतु का भी कार्य करता है। उन्होंने विभिन्न भारतीय भाषाओं में कालिदास और होमर के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए तथा यह भी बताया कि किस प्रकार भारत तथा विदेशों के प्रत्येक भाग में उन अनुवादों ने वहाँ की स्थानीय संस्कृति तथा सांस्कृतिक परंपराओं को उन्नत किया। उन्होंने कहा कि मुझे गर्व है कि अकादेमी न सिर्फ़ शीर्षस्थ लेखकों एवं उनके कार्यों को सम्मानित करती है बल्कि वह अपने अनुवादकों एवं उनके अनुवाद-कार्यों के लिए जो कुछ भी कर सकती है, वह कर रही है।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने व्याख्यान में अनुवाद के विभिन्न पहलुओं

अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव तथा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. केदारनाथ सिंह के साथ अनुवाद पुरस्कार विजेता

उद्घाटन सत्र में व्याख्यान देते हुए डॉ. केदारनाथ सिंह

तथा साहित्य को उन्नत करने में उसकी भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि विश्वभर के साहित्य समुदाय ने अनुवाद की कमोबेश उपेक्षा की है तथा अब यह समय है कि अन्य लोग भी अकादेमी की तरह अनुवाद को प्रोत्साहित करें। सीमाओं से परे रचनात्मक साहित्य ले जाने में उनकी भूमिका के अलावा अनुवाद भी मूल रचनात्मक लेखन के पुर्नजन्म के रूप में काम करता है। विशेष रूप से कविताओं का अनुवाद, अन्य साहित्यिक परंपराओं के शिल्प, उपकरणों तथा उनकी अज्ञात लय की भी आपूर्ति करता है। उन्होंने हिंदी कविता के कई उदाहरण प्रस्तुत किए तथा उनके अंग्रेज़ी अनुवादों पर अपने विचार व्यक्त किए।

साहित्य अकादेमी एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता डॉ. केदारनाथ सिंह ने साहित्य में अनुवाद की भूमिका एवं उसके स्थान पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने इस बात पर हर्ष व्यक्त किया कि अकादेमी अनुवादकों को उनके अनुवाद के लिए सम्मानित तथा उन्हें मान्यता प्रदान कर रही है तथा आजकल अनुवादकों को पुरस्कार स्वरूप वित्तीय लाभ भी उपलब्ध हैं। उन्होंने यह भी बताया कि अनुवाद ने किस प्रकार से उनके जीवन को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं तथा उनके साहित्यिक स्तर को और अधिक समृद्ध किया। उन्होंने यह भी कहा कि अकादेमी जैसी संस्थाओं को प्रमुख भारतीय साहित्यिक कार्यों को विश्व की अन्य भाषाओं में अनूदित करवाना चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में विभिन्न साहित्यिक परंपराओं के इतिहास को संकलित करने में अनुवाद अहम भूमिका निभाता है।

अकादेमी के सचिव ने प्रत्येक पुरस्कार विजेता का प्रशस्ति पाठ पढ़ा, अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने प्रत्येक पुरस्कार विजेता को पारंपरिक असमिया गमछा प्रदान करके सम्मानित किया तथा अकादेमी के अध्यक्ष ने पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार राशि का चैक तथा ताम्र फ़लक भेंट किए। अंत में उपाध्यक्ष ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

अनुवाद पुरस्कार विजेताओं की सूची

(स्व.) दीपिका चक्रवर्ती (असमिया), सोमा बंद्योपाध्याय (बाङ्ला), गोविंद बोडो (बोडो), वीणा गुप्ता (डोगरी), रणजीत होस्कोटे (अंग्रेज़ी), बुद्धदेव चटर्जी (हिंदी), जे.

पी. डोडामणि (कन्नड), अज़ीज़ हाजिनी (कश्मीरी), हेमा नायक (कोंकणी), गुणनाथ झा (मैथिली), उल्लूर एम. परमेश्वरन् (मलयाळम्), इबोचा सोइबम (मणिपुरी), फ़ादर फ्रांसिस डी' बृत्तो (मराठी), आई. के. सिंह (नेपाली), बिलासिनी महांति (ओड़िया), बलवीर माधोपुरी (पंजाबी), (स्व.) शांति भारद्वाज 'राकेश' (राजस्थानी), अभिराज राजेंद्र मिश्र (संस्कृत), मंगल माझी (मुर्मू) (संताली), खीमाण यू.मुलाणी (सिंधी), इरियादियान (तमिऴ), नलीमेला भास्कर (तेलुगु), तथा निज़ाम सिद्दीकी (उर्दू)।

अनुवादक सम्मिलन

23 अगस्त 2014, गुवाहाटी

विवेकानंद केंद्र, गुवाहाटी में साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2013 से सम्मानित समस्त पुरस्कार विजेताओं के अनुवादक सम्मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने समस्त अनुवाद पुरस्कार विजेताओं का स्वागत किया तथा साहित्य अकादेमी के उपाध्याक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम के आरंभ में प्रख्यात कन्नड लेखक तथा साहित्य अकादेमी के पूर्वाध्यक्ष डॉ. यू. आर. अनंतमूर्ति की स्मृति में एक मिनट का मौन रखा गया।

अनुवादक सम्मिलन में समस्त पुरस्कृत अनुवादकों ने एक लेखक तथा एक अनुवादक होने संबंधी अपने अनुभव बताए। बाङ्ला पुरस्कार विजेता सोमा बंद्योपाध्याय ने बताया कि देश के विभिन्न हिस्सों में भ्रमण करने तथा विभिन्न साहित्यिक तथा सांस्कृतिक परंपराओं ने उनकी विभिन्न ध्वनियों, लय तथा अवधारणाओं के प्रति उनकी सोच को समृद्ध किया है तथा उन्हें एक उत्कृष्ट अनुवादक बनाया है। उन्होंने उनके कार्य को चयनित करने के लिए जूरी तथा अकादेमी का आभार प्रकट किया तथा कहा कि ऐसे सम्मिलन समस्त अनुवादकों के लिए लाभप्रद सिद्ध होंगे। जानेमाने बोडो अनुवादक गोविंद बोडो ने बताया पुस्तक का अनुवाद करते समय अनुवादक की लेखक से अधिक ज़िम्मेवारी होती है। डोगरी अनुवादक वीणा गुप्ता ने बताया कि वर्षों से विभिन्न प्रकार के अनुवाद कार्यों को करने के द्वारा उनके ज्ञान में और अधिक बढ़ोतरी हुई है। कश्मीरी अनुवादक अज़ीज़ हाजिनी ने अपनी मातृभाषा की विलक्षणताओं, उसे अन्य भाषाओं में अनूदित करने में आनेवाली दिक़्क़तों तथा एक अनुवादक के रूप में उन्होंने अपने अनुभवों के बारे में बताया। कोंकणी अनुवादक श्रीमती हेमा नायक ने बताया कि किस प्रकार से अनुवाद विभिन्न संस्कृतियों तथा साहित्यिक परंपराओं को पुनः स्थापित करता है तथा इसके साथ ही उन लोगों के उद्देश्यों की भी पूर्ति करता है जिन्हें मूल भाषा का

अनुवादक सम्मिलन में व्याख्यान देती हुई सोमा बंद्योपाध्याय, साथ में हैं कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार

अनुवादक सम्मिलन के प्रतिभागियों ने यू.आर. अनंतमूर्ति की स्मृति में एक मिनट का मौन रखा

ज्ञान नहीं है। मैथिली अनुवादक गुणनाथ झा ने अपनी मातृभाषा से प्रेम के संबंध में बताया तथा यह भी बताया कि किसी प्रकार से वह मैथिली के महान अनुवादकों के कार्यों से प्रभावित होकर एक श्रेष्ठ अनुवादक बन पाए। मलयाळम् अनुवादक उल्लूर एम. परमेश्वरन् ने बताया कि किस प्रकार से उनके पिता तथा कई प्रख्यात अनुवादकों के कार्यों से वह प्रभावित हुए। मणिपुरी अनुवादक इबोचा सोइबम ने अपने अनुवादकीय अनुभवों को साझा किया। मराठी अनुवादक फ़ादर फ्रांसिस डी' बृत्तो ने बाइबल जैसे महाकाव्य को अनूदित करने में आनेवाली चुनौतियों तथा उसे पूरा करने पर मिलनेवाली संतुष्टि पर अपने विचार व्यक्त किए। नेपाली अनुवादक आई.के. सिंह की अनुपस्थिति में उनकी सुपुत्री डॉ. सुष्मिता ने उनका व्याख्यान पढ़ा तथा उनकी ओर से अकादेमी का आभार व्यक्त किया। ओड़िया अनुवादक बिलासिनी महांति ने बताया कि किस प्रकार से अनूदित कार्य स्वयं में सर्जनात्मक कार्य होते हैं। पंजाबी अनुवादक बलबीर माधोपुरी ने अपने जीवन की उन परिस्थितियों का ज़िक्र किया, जिन्होंने उन्हें एक बेहतर अनुवादक बनने को प्रेरित किया।

संस्कृत अनुवादक अभिराज राजेंद्र मिश्र ने अपने अनुवाद पर पड़े विभिन्न प्रभावों की चर्चा की तथा संस्कृत कृतियों को विश्वव्यापी अन्य भाषाओं में अनूदित किए जाने की आवश्यकता पर बल दिया। संताली अनुवादक मंगल माझी (मुर्मू) ने बताया कि वे किस प्रकार से संताली कृतियों को औरों के ध्यान में लाने के लिए प्रयासरत हैं तथा उन्होंने संताली भाषा में किए जानेवाले अनुवाद में आने वाली कठिनाइयों के बारे भी बताया। सिंधी अनुवादक खीमाण यू. मुलाणी ने सिंधी भाषा में अनुवाद संबंधी उपयोगिता के बारे में अपने विचार प्रकट किए। तमिळ अनुवादक इरियादियान ने उनके अनुवाद कार्यों में अकादेमी द्वारा उन्हें दिए गए प्रोत्साहन तथा जिन अन्य अनूदित कृतियों से वे प्रभावित हुए, की चर्चा की। उर्दू अनुवादक निज़ाम सिद्दीकी ने एक अनुवादक के रूप में, स्वयं के कार्यों पर प्रकाश डाला।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कार्यक्रम के अंत में समस्त अनुवादकों तथा प्रतिभागियों का आभार प्रकट किया।

अभिव्यक्ति

द्वितीय सत्र में 'अभिव्यक्ति' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया तथा संक्षेप में साहित्य अकादेमी की गतिविधियों का ब्यौरा प्रस्तुत किया। उन्होंने असम की महान साहित्यिक तथा सांस्कृतिक परंपरा की भी चर्चा की। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रख्यात असमिया लेखक नगेन सइकिया ने किया तथा साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार

प्रो. करबी डेका हज़ारिका, श्री नगेन सइकीया,
प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी तथा डॉ. चंद्रशेखर कंबार

तथा प्रख्यात लेखिका डॉ. करबी डेका हज़ारिका ने भी कार्यक्रम में भाग लिया। करबी डेका हज़ारिका ने अकादेमी द्वारा ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन गुवाहाटी में करने के लिए आभार व्यक्त किया तथा यह आशा व्यक्त की कि यह असम में साहित्यिक प्रयासों को नवशक्ति प्रदान करेगा तथा उन्होंने कहा कि 24 भाषाओं के अनुवादकों को सुनना ऐसा प्रतीत होता है, जिस प्रकार ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर बैठकर भारत के विभिन्न रंगों का अनुभव करना हो।

डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने इस कार्यक्रम का नाम अभिव्यक्ति रखने के पीछे के कारणों को बताया। उन्होंने कहा कि 'अभिव्यक्ति' का अर्थ है अभिव्यक्त करना। यह एक ऐसा मंच है, जहाँ पर सर्जनात्मक व्यक्ति अपनी भावनाओं तथा विचारों को अभिव्यक्त करते हैं, जो अपने आप में एक कला है तथा वह आम आदमी की क्षमताओं के पार है। उन्होंने कहा कि अनुवादक एक भाषा ध्वनियों तथा उसकी परंपराओं को अन्य भाषाओं तथा उसकी पंरपराओं तक पहुँचाने में अहम भूमिका निभाते हैं।

नगेन सइकिया ने अपने उद्घाटन व्याख्यान में कहा कि यद्यपि विभिन्न भाषाओं के विभिन्न उत्स, विभिन्न संस्कृतियाँ एवं साहित्यिक परंपराएं तथा विभिन्न अभिव्यक्ति शैलियाँ एवं कला शैली हो सकती हैं, लेकिन सब जगह उनके पीछे का विचार, भावनाएँ तथा सर्जनात्मकता एक समान है। उन्होंने कहा कि अनुवादक नौका समान होते हैं जो एक परंपरा को कइयों में बाँटते हैं। उन्होंने साहित्य अकादेमी को 45 भारतीय समकालीन लेखकों को एकल मंच प्रदान करने के लिए बधाई दी तथा कहा कि इस प्रकार के प्रयास समस्त साहित्यिक परंपराओं को और अधिक समृद्ध करेंगे।

डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने दो कविताएँ पढ़ीं—'ए ट्री बाइ ए बैंक ऑफ़ ए रिवर' तथा 'मिरर'। विभिन्न भाषाओं के 12 कवियों ने दो समूहों में अपनी कविताएँ तथा उनके अनुवाद प्रस्तुत किए, प्रतिभागी कवि थे—सुमित्रा गोस्वामी (असमिया), गौतम बसु (बाङ्ला), अरबिन्दो उज़ीर (बोडो), राजेश पांड्या (गुजराती), एकांत श्रीवास्तव (हिंदी) तथा आरिफ़ राजा (कन्नड), आर.के. भुबोनसना सिंह (मणिपुरी), अनुराधा पाटिल (मराठी), सुधा एम.राई (नेपाली), वेन्निला ए. (तमिळ), प्रताप सिंह बेताब (उर्दू) तथा वाई. रामकृष्णराव (तेलुगु)। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने समस्त कवियों प्रतिभागियों तथा प्रतिनिधियों का कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आभार प्रकट किया।

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2013 समारोह के भाग के रूप में 24 अगस्त 2014 को 'अभिव्यक्ति' कार्यक्रम के अंतर्गत लेखकों के कहानी-पाठ एवं एक कवि सम्मिलन का आयोजन विवेकानंद केंद्र इंस्टीट्यूट

ऑफ़ कल्चर, गुवाहाटी में किया गया। अभिव्यक्ति कार्यक्रम का प्रथम सत्र कहानी-पाठ का था। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने श्रोताओं एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा प्रख्यात असमिया लेखक श्री लक्ष्मी नंदन बोरा ने इस सत्र की अध्यक्षता की। पाँच लेखकों—देवव्रत दास (असमिया), आर. राही (डोगरी), मनु बालिगर (कन्नड), परेश पटनायक (ओड़िया) तथा एम. नरेंद्र (तेलुगु) ने पहले अपनी मूल कहानियाँ तथा बाद में उनके अनुवाद भी प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात लेखक प्रदीप आचार्य ने की। पाँच लेखकों श्रावणी पाल (बाङ्ला), कावेरी नमबिसन (अंग्रेज़ी), रमेशचंद्र शाह (हिंदी), आशा मेनोन (मलयाळम्) तथा आई. रवींद्र सिंह (मणिपुरी) ने अपने लेखकीय अनुभवों को साझा किया। कार्यक्रम के अंत में, सत्राध्यक्ष श्री प्रदीप आचार्य ने समाहार प्रस्तुत करते हुए पठित आलेखों पर अपने विचार प्रकट किए। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के मंच से, जहाँ पर विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों तथा साहित्यिक परंपराओं का मिलन होता है, से बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात असमिया लेखक डॉ. अनिल बोरो ने की तथा पाँच लेखकों—उर्मिला शिरीष (हिंदी), महेंद्र कदम (मराठी), देव भंडारी (नेपाली), भारत ओला (राजस्थानी) तथा सोलाइ सुंदरपेरूमल (तमिळ्) ने अपनी मूल कहानियाँ तथा उनके अनुवाद प्रस्तुत किए। डॉ. बोरो ने पठित कहानियों पर अपने विचार व्यक्त किए।

चतुर्थ एवं अंतिम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मणिपुरी लेखक एवं अनुवादक प्रो. रॉबिन एस. न्गाङगम ने की। यह सत्र कविता पाठ पर आधारित था। नौ कवियों—जे. पुजारी (असमिया), मंगल सिंह हाज़ोवारी (बोडो), जी.एम. अजीर (कश्मीरी), माधव बोरकर (कोंकणी), फूलचंद्र झा 'प्रवीण' (मैथिली), सुरजीत जज (पंजाबी), बलराम शुक्ल (संस्कृत), अर्जुन चरण हेम्ब्रम (संताली) तथा जया जादवाणी (सिंधी) ने अपनी मूल कविताएँ उनके अनुवाद के साथ प्रस्तुत कीं। प्रो. रॉबिन एस. न्गाङगम ने समाहार करते हुए पठित कविताओं पर अपने विचार व्यक्त किए।

त्रिदिवसीय अनुवाद पुरस्कार 2013 के समापन के अवसर पर साहित्य अकादेमी के सचिव ने असम के समस्त साहित्यिक समुदाय, कार्यक्रम के प्रतिभागियों कवियों एवं लेखकों, अनुवाद पुरस्कार विजेताओं आदि के प्रति आभार व्यक्त किया।

बाल साहित्य पुरस्कार 2014 अर्पण समारोह

साहित्य अकादेमी द्वारा वार्षिक बाल साहित्य पुरस्कार 2014 का पुरस्कार अर्पण समारोह आयोजित किया गया, जिसमें 23 भारतीय भाषाओं के बाल साहित्य लेखकों को सम्मानित किया गया। समारोह का आयोजन कुवेंपू कला क्षेत्र, बेंगळूरु में 14 नवंबर 2014 को संपन्न हुआ। पुरस्कार साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष, ज्ञानपीठ सम्मानित कन्नड कवि एवं नाटककार डॉ. चंद्रशेखर कंबार द्वारा प्रदान किए गए।

अपने स्वागत भाषण में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि यह सुखद संयोग है कि इस पुरस्कार अर्पण समारोह का आयोजन भारतवर्ष के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू के 125वीं वर्षगांठ पर हो रहा है। श्री राव ने किसी राष्ट्र एवं समाज के विकास में बच्चों की भूमिका के महत्त्व को इंगित करते हुए अकादेमी द्वारा 24 भारतीय भाषाओं में बालसाहित्य के विकास के लिए किये जा रहे प्रयत्नों को रेखांकित किया।

मुख्य अतिथि श्री जी. वेंकट सुबैया, साहित्य अकादेमी के सचिव तथा उपाध्यक्ष के साथ विजयी प्रतिभागी

इस आयोजन के मुख्य अतिथि कन्नड के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान जी. वेंकट सुबैया थे। उन्होंने अपने वक्तव्य में एस. राधाकृष्णन के शब्दों को याद करते हुए कहा कि समस्त भारतीय साहित्य में भारतीय संस्कृति एवं परंपराएं परिलक्षित होती हैं और बाल साहित्य उनसे अलग नहीं है। उन्होंने अपने वक्तव्य के समर्थन में कन्नड की कुछ कविताओं का पाठ भी किया। श्री सुबैया ने दृष्टव्य मीडिया से अपील की कि वे बाल साहित्य के मुद्दों को प्रमुखता से प्रसारित करें।

पुरस्कार ग्रहण करते हुए सुश्री शुभद्रा सेनगुप्त

लेखकों को पुरस्कार प्रदान करते हुए डॉ. कंबार ने लेखकों को बच्चों के लेखन के प्रति जिम्मेदारियों से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि टैगोर से लेकर आज तक आधुनिक बंगाली साहित्य में प्रत्येक लेखक बाल साहित्य को भी समृद्ध कर रहा है। ऐसी स्थिति अन्य भारतीय भाषाओं में नहीं है। इसमें उल्लेखनीय अपवाद भी हैं, लेकिन सामान्यतः बच्चों के साहित्य का आयोजन कम है। उन्होंने आगे कहा कि भारतीय साहित्य की अच्छाई के लिए जल्द ही इस रुझान में परिवर्तन होना चाहिए।

कार्यक्रम का संचालन के. श्रीनिवासराव, सचिव साहित्य अकादेमी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन भी किया। कार्यक्रम में लेखक कवि एवं साहित्य रसिक भारी संख्या में उपस्थित थे।

बाल साहित्य पुरस्कार 2014 के विजेता लेखक

दिनेश चंद्र गोस्वामी (असमिया)
गौरी धर्मपाल (बाङ्ला)
कौशल्या ब्रह्म (बोडो)

पुरस्कार ग्रहण करती हुई सुश्री सूर्या अशोक

ध्यान सिंह (डोगरी)
शुभद्रा सेनगुप्त (अंग्रेज़ी)
ईश्वर परमार (गुजराती)
दिनेश चमोला 'शैलेश' (हिंदी)
आनंद वी. पाटिल (कन्नड)
हामिद सिराज (कश्मीरी)
सूर्या अशोक (कोंकणी)
(स्व.) जीवकांत (मैथिली)
के.वी. रामनाथन (मळयाळम)
राजकुमार भूबनसना (मणिपुरी)
माधुरी पुरंदरे (मराठी)
मुन्नी सापकोटा (नेपाली)

पुरस्कार ग्रहण करती हुई सुश्री माधुरी पुरंदरे

दास बेनहुर 'जितेंद्रनारायण दास' (ओड़िया)
कुलबीर सिंह सूरी (पंजाबी)
नीरज दइया (राजस्थानी)
कानाइलाल टुडु (संताली)
वासुदेव 'सिंधु-भारती' (सिंधी)
इरा. नटरासन (तमिऴ)
दासरि वेंकटरमण (तेलुगु)
महेबूब राही (उर्दू)

लेखक सम्मिलन

साहित्य अकादेमी द्वारा सभी बाल साहित्य पुरस्कार विजेता लेखकों के साथ 15 नवंबर 2014 को नयना आडिटोरियम, बेंगळूरु में लेखक सम्मिलन का आयोजन किया गया।

अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने विजेता लेखकों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए इस लेखक सम्मिलन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अकादेमी साहित्यिक आदान-प्रदान एवं संवाद के लिए प्रतिबद्ध है। इस प्रकार के सम्मिलन से एक सार्थक परिचर्चा एवं लेखकों को और अधिक सीखने एवं अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है। उन्होंने आगे कहा कि अकादेमी द्वारा इस प्रकार के आयोजन पूरे वर्ष देश

लेखक सम्मिलन में उपस्थित श्रोता

के किसी न किसी हिस्से में आयोजित होते रहते हैं। सम्मिलन की अध्यक्षता अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने की।

सम्मिलन में दिनेशचंद्र गोस्वामी (असमिया) ने 'प्राचीन आसाम में विज्ञान लेखन' विषय पर अपना वक्तव्य दिया। बाल लेखन में ऐतिहासिक तत्त्व की उपस्थिति, विषय पर अंग्रेज़ी भाषा में सम्मानित शुभद्रा सेनगुप्त, आनंद वी. पाटील (कन्नड), सूर्या अशोक (कोंकणी), के. वी. रामनाथन (मलयाळम्), आर.के. भूबनसना (मणिपुरी) ने अपने लेखन अनुभवों को साझा किया।

'बाल लेखन : नई चुनौतियाँ' विषयक संगोष्ठी

साहित्य अकादेमी द्वारा 'बाल लेखन : नई चुनौतियाँ' विषयक संगोष्ठी एवं काव्यगोष्ठी का आयोजन 16 नवंबर 2014 को नयना आडिटोरियम, बेंगळूरु में किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन लब्धप्रतिष्ठ लेखक शशि देशपांडे ने किया तथा अध्यक्षता अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने की। अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के सलाहकार नरहल्ली सुब्रमणियम ने वक्ताओं का परिचय कराया। मुख्य अतिथि, वक्ताओं एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने भारत जैसे बहुभाषी एवं बहुसांस्कृतिक समाज में बाल लेखन साहित्य से संबंधित चुनौतियों को रेखांकित किया।

सुश्री शशि देशपांडे ने लेखकों के समक्ष बाल साहित्य के सृजन की चुनौतियों के बारे में प्रकाश डाला और उन चुनौतियों के बारे में भी जिनका बाल साहित्य के अनगिनत प्रकाशक सामना कर रहे हैं। उन्होंने संसार में तेज़ी से हो रहे बदलाव एवं तदनुसार लेखकों को उन्हें अपनाने की सलाह भी दी। कंबार ने विज्ञान तथा अन्य विषयों पर भारतीय भाषाओं में लेखन पर ज़ोर दिया।

विख्यात भारतीय अंग्रेज़ी लेखिका सुश्री अनिता नायर ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की। अपने अध्यक्षीय भाषण में सुश्री नायर ने कहा कि आज के बच्चे दो संसारों में फँसे हुए हैं, उनके एक ओर पारंपरिक संसार है तो दूसरी तरफ़ मीडिया प्रभावित संसार है। बाल साहित्य के लेखक बच्चों के लिए कथा पथ तैयार करने के संघर्ष से लगातार जूझ रहे हैं। बाल साहित्य को बाल मनोवृत्ति एवं उसके व्यक्तित्व का विकास करनेवाला होना चाहिए। असमिया लेखिका सुश्री नंदिता फूकन, हिंदी लेखक विनोद चंद्र पांडेय, कन्नड लेखक जी.बी. हरीश एवं मराठी लेखक राजीव तांबे ने अपनी भाषा में रचित बाल लेखन की चुनौतियों के अनुभवों को साझा किया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात तमिळ लेखक सिर्पी बालसुब्रमणियम ने की। श्री सुब्रमणियम ने तमिळ बाल

संगोष्ठी में प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए डॉ. के. श्रीनिवासराव

साहित्य के इतिहास की चर्चा करते हुए भारतीय परिवार एवं सामाजिक व्यवस्था की वर्तमान स्थिति की चर्चा की। उन्होंने राज्य सरकारों को बच्चों की शिक्षा मातृभाषा में दिए जाने की वकालत की। उन्होंने कहा कि बच्चों को नर्सरी गीतों से साहसिक विज्ञान कथा की ओर बढ़ना चाहिए। उन्होंने बच्चों को हर प्रकार की पारंपरिक ओपरेशंस से मुक्ति की चुनौती की चर्चा की। श्रीमती जया मित्र, श्रीमती मनोरमा बिस्वाल महापात्र, उन्नीकृष्णन पोनकुन्नम, ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम का समापन एक बहुभाषी काव्यगोष्ठी से हुआ। लब्धप्रतिष्ठ कन्नड लेखक डॉ. एच.एस. वेंकटेशमूर्ति ने गोष्ठी की अध्यक्षता की। बोडो, मणिपुरी, कन्नड, तमिळ, तेलुगु, सिंधी, संताली, उर्दू भाषा के कवियों ने बच्चों के लिए रचित कविताओं का पाठ किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. एच.एस. वेंकटेशमूर्ति ने कहा कि बाल लेखन के लिए एक विशेष मन मस्तिष्क की आवश्यकता होती है। हमारे अंदर बाल सुलभ व्यवहार होना चाहिए। बाल लेखन एक जुनून है। उन्होंने कहा कि 'आज का पाठ कल की सफलता का नेतृत्व करता है'। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी, प्रतिभागियों, लेखकों, कवियों, श्रोताओं के प्रति आभार व्यक्त किया, जिन्होंने इस आयोजन को सफल बनाने में हर तरह की सहायता की।

युवा पुरस्कार 2014 अर्पण समारोह

10 फ़रवरी 2015, शिलांग

साहित्य अकादेमी द्वारा युवा पुरस्कार 2014 अर्पण समारोह का आयोजन 10 फ़रवरी 2015 को यू सोसो थम सभागार, स्टेट सेंट्रल लाइब्रेरी, शिलांग में किया गया।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत करते हुए सभी पुरस्कृत रचनाकारों को बधाई दी एवं निर्णायक मंडल के सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया।

अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने पुरस्कार अर्पण समारोह की अध्यक्षता करते हुए पुरस्कृत रचनाकारों श्रीमती मणिका देवी (असमिया) अभिमन्यु माहात (बाङ्ला), शांति बसुमतारी (बोडो), कौशिक बरुआ (अंग्रेज़ी), अनिल चावडा (गुजराती), कुमार अनुपम (हिंदी), सुश्री काव्यश्री कदमे (कन्नड), नरेश चंद्रकांत नायक (कोंकणी), प्रवीण कश्यप (मैथिली), सुश्री इंदुमेनन (मलयाळम्), वाङ्थोई खुमान (मणिपुरी), अवधूत डोंगरे (मराठी), नरेंद्र कुमार भोइ (ओड़िया), गगनदीप शर्मा (पंजाबी), राजूराम बिजारणियाँ 'राज' (राजस्थानी), परांबा श्रीयोगमाया (संस्कृत), आनूपा मारंडि (संताली), आर. अभिलाष (तमिळ), हरिनाथ रेड्डी (तेलुगु) और इल्तेफ़ात अमजदी (उर्दू) को स्मृति चिह्न एवं पुरस्कार राशि का चेक प्रदान किया। कौशिक बरुआ पुरस्कार ग्रहण करने के लिए उपस्थित नहीं हो सके। श्री कौशिक का पुरस्कार उनकी माता जी ने स्वीकार किया। डोगरी, कश्मीरी एवं सिंधी भाषाओं के लिए पुरस्कारों की घोषणा नहीं हुई। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री तिवारी ने कहा कि साहित्य समय से प्रतिबद्ध होता है और लेखन के लिए युवा रचनाकारों को प्रोत्साहित करता है। इस विश्वास के साथ कि वे अपने समय की सच्चाई को प्रस्तुत करेंगे।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री जीत थाइल ने बिना किसी भूमिका के कहा कि कविता के संदर्भ में दस ऐसे कारण हैं कि किसी को क्यों नहीं लिखना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि कविता लेखन से किसी प्रकार का आर्थिक लाभ नहीं होता। उन्होंने अनुवादकों की कमी के बारे में भी चर्चा की।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, अकादेमी के अध्यक्ष तथा सचिव के साथ युवा पुरस्कार विजेता

कार्यक्रम का समापन अकादेमी की सामान्य परिषद के सदस्य प्रो. सिलवानस लामारे के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ। कार्यक्रम में शहर के गणमान्य, लेखक, कवि एवं साहित्य रसिक भारी संख्या में उपस्थि थे।

कार्यक्रम के अंत में मेघालय का रंगारंग लोकनृत्य प्रस्तुत किया गया।

लेखक सम्मिलन

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2014 अर्पण समारोह के दौरान पुरस्कृत लेखकों के एक सम्मिलन का आयोजन 10 फ़रवरी 2015 को कला एवं संस्कृति सभागार, स्टेट सेंट्रल लाइब्रेरी, शिलांग में किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने इस सम्मिलन की अध्यक्षता की। युवा पुरस्कार प्राप्त सभी बाईस लेखकों ने इस अवसर पर अपने रचनात्मक अनुभव साझा किए। कुछ लेखकों ने यह भी बताया कि वे क्यों लिखते हैं और उनके लेखन की प्रेरणा और प्रभाव क्या हैं। अंत में सम्मिलन का समाहार करते हुए डॉ. राव ने सभी पुरस्कृत लेखकों के प्रति आभार प्रकट किया तथा उन्हें बधाई दी।

आविष्कार : युवा लेखक सम्मिलन

युवा पुरस्कार 2014 अर्पण समारोह के दौरान साहित्य अकादेमी द्वारा अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन का आयोजन 11-12 फरवरी 2015 को स्टेट सेंट्रल लाइब्रेरी के कला एवं संस्कृति सभागार शिलांग में किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन राष्ट्रीय एकता को मज़बूत करना भी साहित्य अकादेमी की एक कोशिश है। 24 भारतीय भाषाओं में निरंतर हो रहे कार्यक्रम इस बात का सबूत हैं।

असमिया के लब्धप्रतिष्ठ लेखक श्री लक्ष्मीनंदन बोरा ने सम्मिलन का उद्घाटन करते हुए युवा लेखकों की भूमिका को साहित्य के विकास का कारक बताया। श्री बोरा ने युवा लेखकों के इस सम्मिलन के आयोजन पर अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया। अपने वक्तव्य का समाहार करते हुए युवा लेखकों को छह सुझाव दिए : लेखक को सच बोलना चाहिए क्योंकि साहित्य सच का प्रतिबिंब होता है। उन्हें हमेशा पीड़ा बर्दाश्त करने और

प्रतिक्रियावादी चेहरों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। उन्हें धैर्यवान होना चाहिए। उन्हें अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। उन्हें लेखन के लिए एक जुनून विकसित करना चाहिए। एक लेखक को हर चीज़ को सीखने की प्रक्रिया को जानना चाहिए।

सम्मिलन के मुख्य अतिथि प्रो. सिलवानस लामारे ने खासी समुदाय के समृद्ध मौखिक इतिहास के बारे में बात की। उन्होंने एक खासी लोककथा का सार भी प्रस्तुत किया। उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा पूर्वोत्तर के वाचिक साहित्य की पांडुलिपि तैयार कराने के प्रयास की सराहना की।

उसके बाद काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रत्येक कवि ने सबसे पहले अपनी मातृभाषा में तत्पश्चात अंग्रेज़ी अनुवाद में अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। इस सत्र में विजयशंकर शर्मा (असमिया), अरिबम रिमीता देवी, (मणिपुरी), गीतिका (तेलुगु), सुरजीत होश (डोगरी), इरशाद मगामी (कश्मीरी) तथा विशाल खुल्लर (उर्दू) ने अपनी कविताओं का पाठ किया। धन्यवाद ज्ञापन अकादेमी की उपसचिव श्रीमती रेणु मोहन भान ने दिया।

दूसरे दिन के पहले सत्र का विषय था—"मैं क्यों लिखता हूँ?" तथा इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. के.सी. बराल ने की। गुजराती लेखक चिंतन शेलत ने कहा कि उन्होंने जिज्ञासावश लेखन आरंभ किया था और बाद में लेखन मेरा जुनून बन गया। पंजाबी कवि कुलवीर ने कहा कि कविता अगम्य तक पहुँचती है। यह निर्जीव के साथ एक संवाद बनाने की अनुमति देती है। तमिळ लेखिका मानुषी ने कहा कि लेखन एक दर्द निवारक का काम करता है। रीताव्रत मित्र एवं सलिल गवली ने कहा कि किस प्रकार उनका लेखन प्रकृति, मिथक एवं संसार के समृद्ध साहित्यिक संपदा से प्रभावित है। उद्दीपना गोस्वामी ने कहा कि मैं लिखती हूँ क्योंकि मैं हूँ। पढ़े गए आलेखों पर श्रोताओं द्वारा चर्चा की गई।

द्वितीय सत्र कहानी पाठ को समर्पित था। डॉ. स्ट्रीमलेट दखार ने सत्र की अध्यक्षता की। ओड़िया की सरोज बल ने अपनी कहानियों के अंश प्रस्तुत किए। अलफिदारी खरशेन्तिव एवं प्रज्ञा मटिहल्ली ने अपनी कहानियाँ प्रस्तुत कीं।

अंतिम सत्र की अध्यक्षता अकादेमी की अंग्रेज़ी परामर्श मंडल के सदस्य एस्थर सिएम ने की तथा दिलीप कुमार झा 'लूटन' (मैथिली), दुष्यंत (राजस्थानी), कमल रेग्मी (नेपाली), अभय नाइक (कोंकणी), कौशल तिवारी (संस्कृत), मनोज चावडा (सिंधी), जीन सी दखार (खासी), रवि लक्ष्मीकांत कोरडे (मराठी) एवं फुगुना गोयारी (बोडो) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

एस्थर सियम ने समापन वक्तव्य दिया तथा पढ़ी गई रचनाओं पर अपने विचार रखे।

कार्यक्रम के अंत में अकादेमी की उपसचिव श्रीमती रेणु मोहन भान ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

भाषा सम्मान अर्पण समारोह

24 अप्रैल 2014, वाराणसी

साहित्य अकादेमी द्वारा 24 अप्रैल 2014 को वाराणसी के पराड़कर स्मृति भवन स्थित गर्दे सभाकक्ष में पंडित हरिराम द्विवेदी को भोजपुरी भाषा एवं साहित्य में विशिष्ट योगदान के लिए भाषा सम्मान 2012 से विभूषित किया गया। यह सम्मान अकादेमी द्वारा दिए जानेवाले मुख्य पुरस्कार के समकक्ष महत्त्व का है। यह सम्मान अकादेमी द्वारा ग़ैर मान्यताप्राप्त भाषाओं और मध्यकालीन एवं कालजयी साहित्य के क्षेत्र में विद्वानों को उनके विशिष्ट योगदान के लिए प्रदान किया जाता है। भोजपुरी भाषा के लिए यह सम्मान दूसरी बार प्रदान किया गया। इसके पहले इस सम्मान से मोती बी. ए. को विभूषित किया जा चुका है।

कार्यक्रम का आरंभ पाणिनि संस्कृत गुरुकुल, वाराणसी की आचार्य डॉ. प्रीति विमर्शिनी और उनके शिष्यों द्वारा